पंजीयन संख्या-6994/98
www.thearyasamaj.org
डाक पंजीयन संख्या-एमएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2011-13

ओ३म्

कृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-१६, अंक:-४, अक्टूबर, सन्-२०१३, सं०-२०७० वि०, दयानंदाब्द १९०, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११४; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

शास्त्री–जयन्ती (२ अक्टूबर) पर विशेष

आर्य समाज ने दिया देश को सुयोग्य और लोकप्रिय प्रधानमंत्री

लाल बहादुर थे आर्य समाज के जुझारू कार्यकर्त्ता और उपदेशक

-निहाल सिंह आर्य-

[मास्टर निहाल सिंह आर्य ने आजीवन आर्य समाज की सेवा वाणी और लेखनी के माध्यम से की। दिल्ली में नांगलोई आपका कर्मक्षेत्र रहा। आप इतिहास के सुयोग्य विद्वान् थे। आपने सर्वखाप पंचायत के इतिहास में से आर्य समाज सम्बन्धी अमूल्य प्रसंगों की खोज की।]

स्वतंत्र भारत के दूसरे बहुप्रतिष्ठित प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री मृदुभाषी, धैर्यवान, लगनशील, कर्मठ, राष्ट्र के एक ईमानदार कर्णधार थे। उन्होंने भारत वर्ष की प्राचीन नगरी काशी के पास मुगलसराय ग्राम में २ अक्टूबर, १९०४ में जन्म लेकर अपने धर्मात्मा पिता-माता श्री शारदा प्रसार अध्यापक तथा रामदुलारी देवी के नाम को अमर उज्ज्वल कर दिया। शैशव काल में इनके पिताजी का स्वर्गवास हो जाने से उनका बचपन तथा शिक्षा-दीक्षा बहुत निर्धनता, अभावों तथा कष्टों में हुई। आप आरम्भिक शिक्षा वाराणसी के हरिश्चन्द्र विद्यालय से प्राप्त कर, केवल १७ वर्ष की अल्पावस्था में ही सन् १९२१ में महात्मा गांधी जी के आह्वान पर असहयोग आन्दोलन के तीस हजार स्वदेश भक्तों सत्याग्रहियों के साथ ढाई वर्ष तक जेल में बन्द रहे।

लाला लाजपतराय का सान्निध्य

यद्यपि उनके मन में उच्च शिक्षा प्राप्ति की उत्कट इच्छा थी, इसलिए उसकी पूर्ति के लिए स्वदेश भक्तों द्वारा काशी में खोले गये राष्ट्रीय विद्यालय काशी विद्यापीठ में भारतीय संस्कृति की पद्धति से बहुत कठिन परिश्रम सतत लगन से १९२५ में प्रथम श्रेणी में शास्त्री की उपाधि प्राप्त करके 'शास्त्री जी' कहलाए। उन दिनों महर्षि दयानन्द द्वारा १८७५ में बम्बई में खोले गए आर्य समाज का धर्मदेश प्रचार का कार्य जोरों पर था। स्वदेश भक्त उच्चकोटि के आर्यजन भी स्वतंत्रता आन्दोलन के इन ऐसे सत्याग्रहों में तभी से भाग देने लग गए थे। १९०६ में कुटिल शासक अंग्रेजों द्वारा बंगाल के दो खण्ड किये जाने से सारे भारत में प्रसिद्ध स्वातन्त्र्य नेता लाल, बाल, पाल के नाम से विख्यात थे। पंजाब के वीर वक्ता स्वनामधन्य लाला लाजपत राय आर्यसमाज की ओर से दलित व अछूतोद्धार सभा के प्रधान थे। उन्होंने लाल बहादुर शास्त्री जी को भी धर्मनिष्ठ दयालु परोपकारी और कर्तव्य पूर्ण नवयुवक समझकर अपनी सभा में प्रचारक नियुक्त कर लिया था।

शास्त्री जी मुजफ्फर नगर में

१८२६ में मुजफ्फर नगर का नया मण्डल बनाया गया था। मुजफ्फर नगर, तहसील बुढ़ाणा तथा शामली के मध्य ८४ ग्रामों की बालियाण खाप का सिसौली ग्राम प्रमुख तथा बड़ा होने से वहां १९०५ से वस्तीराम आर्य भजनोपदेशक ने आर्य समाज का प्रचार किया, लाला लाजपत राय ने १९२३ में इस ग्राम के मध्य में आर्य समाज मन्दिर का शिलान्यास किया था। लाला लाजपत राय की बहन सिसौली के धर्मात्मा धनाढ्य लाला बनवारी लाल के आर्यसमाजी पुत्र रामचन्द्र सहाय से ब्याही थी। बनवारी लाल के उस क्षेत्र में तथा कई अन्य नगरों में सैकड़ों भवन बने हुए थे।

अछूतोद्धारक शास्त्री जी

श्री लाल बहादुर शास्त्री जी ने १९२५ से १९२८ तक तीन वर्ष आर्य उपदेशक के रूप में मुजफ्फरनगर तथा मेरठ मण्डल के बड़े-बड़े ग्रामों, नगरों तथा आर्य उत्सवों में कर्तव्यनिष्ठा से दलित अछूतोद्धार का प्रचार किया था। तब इनको १२५ रुपये वेतन मिलते थे। तब ये हरिजनों (तथाकथित भंगी और चमार कहाने वाले) में भारत के प्रसिद्ध धर्मग्रन्थ रामायण और गीता की कथा सुनाया करते थे। यह बहुत ही कोमल वाणी से उत्साह सहित श्लोकों की सुन्दर व्याख्या करते थे। इनका उपदेश भी हृदयग्राही होता था। ग्राम्यजन बहुत लगन और श्रद्धा से इनके प्रचार से प्रभावित होकर इनसे स्नेह और सम्मान करते थे।

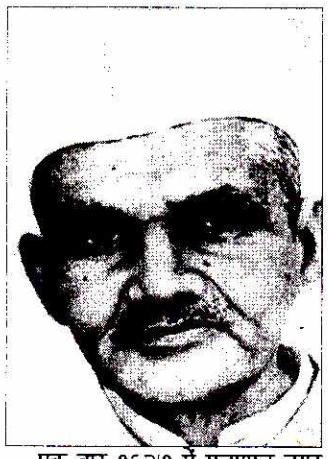

एक बार १९२७ में मुजफ्फर नगर के जीमणे ग्राम के आर्यसमाज के महोत्सव में आर्य विद्वानों, ईसाई पादरियों में शास्त्रार्थ हुआ था। आर्यसमाज के अलगूराय शास्त्री, लाल बहादुर शास्त्री, मास्टर कुन्दनलाल कोली जाट (जो सीताराम बाजार दिल्ली के राजपाल शास्त्री के दादा तथा रामपाल शास्त्री की पिता थे) ईसाई के पादरी फ़िरगुणी साहब और पटियाला के पादरी अब्दुल हक थे। पादरी शास्त्रार्थ में हार गये और जीमणे ग्राम के जो चमार बहला फुसला कर ईसाई बना लिए थे, वे शास्त्रार्थ में हारे पादरियों के जाल से निकल गए। तो पादरी उनको गाली देने लगे। तब उन हरिजनों ने उस पादरी को खूब पीटा और भगा दिया। ये हरिजन लाल बहादुर शास्त्री के कुशल प्रचार से आर्य समाज के श्रद्धालु बन गए थे।

लोकप्रिय शास्त्री जी

उसी जीमणे ग्राम के पास एक ग्राम भैंसी भी है। वहां के तथा आसपास के ग्रामों के दर्शक श्रोता नर-नारी भी शास्त्रार्थ में आर्यसमाज की जीत से तथा लाल बहादुर शास्त्री के प्रेम स्वभाव से बहुत प्रसन्न थे। भैंसी ग्राम के चौधरी तिलकराज की वृद्धा दादी तो लाल बहादुर शास्त्री जी के लिए एक लोटे में दूध घी-खाण्ड मिला कर भर लाईं और शास्त्री जी के हाथ में लोटा देकर बोलीं कि बेटा यह दूध का लोटा पी ले और हम तुमको इसी प्रकार दूध पिलाया करेंगे। तुम रोटी मत खाया करो। तब मुजफ्फरनगर मण्डल में तीन वर्ष तक लाल बहादुर शास्त्री वहां के ग्रामजनों में बहुत सम्मानीय तथा प्रिय हो गये थे। उन्होंने बहुत से जनों, युवकों तथा हरिजन भाइयों को सन्ध्या हवन सिखा कर जनेऊ भी दिए थे।

सादा जीवन उच्च विचार

मुजफ्फर नगर के डी.ए.वी.कालेज की प्रबन्धकर्तृ सभा ने लाल बहादुर शास्त्री का मासिक वेतन १२५ रुपये थोड़ा समझकर मांगेराम आर्य की सहायता से उसी कॉलेज में शास्त्री जी के निवास की व्यवस्था छात्रावास में कर दी। तब उस जाट छात्रावास के प्रबन्धक चौधरी शेरसिंह अच्छे आर्यसमाजी थे। उन्होंने छात्रावास के ६० छात्रों से शास्त्री जी के लिए बारी बारी से घी देना जिम्मे लगा दिया और छात्रावास की ओर से दूध का भी दैनिक प्रबन्ध कर दिया, वह शास्त्री जी से कहने लगे कि आप अपने १२५ रुपये सारे घर पर दिया करें। छात्रावास की दुग्धशाला से एक जाट चौधरी डेरी से आया करता था। शास्त्री जी को एक सेर दैनिक दूध मिलता था।

हृदय सम्राट् प्रधानमंत्री

लाल बहादुर शास्त्री ने लोक सेवा मण्डल तथा दलित अछूताद्धार सभा में आजीवन सदस्यता ग्रहण करके हरिजन उत्थान का बहुत कार्य किया, उनके बच्चों को सबके साथ प्रवेश करवया। २३ वर्ष की अवस्था में ही इन्होंने विवाह में अपने श्वसुर से दहेज में केवल एक चर्खा और कुछ गज खादी ही लेना स्वीकार किया। शेष को नकार कर दिया। उनकी धर्मपत्नी ललिता देवी भी एक आदर्श साध्वी नारी थीं। लाल बहादुर शास्त्री जी भारत की राजनीति में उत्तरोत्तर प्रगति करते ही गए। वह १९३७ में उ. प्र.कांग्रेस पार्टी के सचिव बने। १९४०-४१ में व्यक्तिगत सत्याग्रह के कठिन कष्टों

(शेष पृ. 3 पर.....)

विनय पीयूष

दिशा-दिशा में जो मिलता !

यस्येमे हिमवंता महित्वा यस्य समुद्रꣳ रसया सहाहुः।
यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम।।
(यजु० 25/12)

जिसकी महिमा से होते
हिमवंत उजागर,
जिसका स्नेह-संग पाकर
कहलाते सागर,
दिशा-दिशा में जो मिलता
बाँहें फैलाकर,
सुग्र-स्वरूप उस प्रभु को
अपना हवि दें हम !

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

ज्ञान और कर्म का द्वन्द्व

ज्ञान शक्ति (ज्ञानेन्द्रियाँ) और कर्म शक्ति (कर्मेन्द्रियाँ) के समुचित तालमेल से सामाजिक एवं राष्ट्रीय अभ्युत्थान के बंद दरवाजे खुल जाते हैं किन्तु ज्ञान शक्ति और कर्मशक्ति के संकुचित तालमेल से ऊँचाई के शिखरों पर पहुँचा हुआ समाज भी रसातल में चला जाता है। दो उदाहरणों से इसे समझने में आसानी होगी। सन् १८७६ की बात है, जब बरेली शहर के कोतवाल श्री नानक चंद्र के बिगड़ैल बेटे मुंशीराम ने नगर में आये हुए प्रसिद्ध समाज सुधारक स्वामी दयानंद सरस्वती जी महाराज के अपने पिता के आदेशानुसार दर्शन किये और उनका व्याख्यान सुना तो उसने मदिरापान जैसे व्यसनों के परित्याग का मन ही मन निश्चय किया किन्तु रात्रि आते आते नित्य नियमानुसार उसके कदम मदिरालय की ओर बढ़ चले। उसने शराब के जाम को अपने हाथों में थाम लिया; सहसा उसके कल्पनालोक में स्वामी जी महाराज की दिव्य आकृति प्रत्यक्ष हुई और लगा जैसे यह आकृति हाथों में दंड लिए हुए कह रही हो- मुंशीराम! यह क्या करने जा रहा है? मुंशीराम ने इस ध्वनि को सुनते ही शराब के ग्लास को उठाकर जमीन पर पटक दिया और मदिरालय से जो एक बार लौटकर आया तो फिर उधर कभी रुख नहीं किया।

ज्ञानशक्ति के सही निर्देश और कर्मशक्ति के सही अनुपालन ने मुंशीराम युवक को आगे चलकर महात्मा मुंशीराम बना दिया और इतिहास उसे गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से स्मरण कर फूला नहीं समाया।

ज्ञानशक्ति और कर्मशक्ति के संकुचित तालमेल का उदाहरण भी कम लोमहर्षक नहीं है। आज के सर्वाधिक चर्चित संत शिरोमणि महात्मा आसाराम बापू ने अपने प्रपंचमय जीवन की शृंखला में एक कड़ी जोड़ते हुए आश्रम के नितान्त सुरक्षित और संरक्षित एकान्त में छलपूर्वक जब एक अवयस्क बालिका को बुलाया तो यदि उनकी ज्ञानशक्ति ने कर्मशक्ति को सही निर्देश दिया होता और यह कहा होता- 'अरे, आसाराम, जीवन के ७३ बसंत देखने के बाद भी आज तू यह क्या करने जा रहा है?' तो शायद संत शिरोमणि कहे जाने वाले आसाराम बापू आज 'आसूमल' के नाम से जेल की कोठरियों में पैर पसारने को विवश न होते!

जिस ज्ञानशक्ति और कर्मशक्ति के सामंजस्य और संतुलन ने मुंशीराम को स्वामी श्रद्धानन्द बना दिया- उसी ज्ञानशक्ति और कर्मशक्ति के संकुचित संतुलन ने आसाराम बापू को आसूमल बना कर रख दिया। (जेल के रजिस्टर में आसाराम ने अपना नाम आसूमल दर्ज कराया था)। एक श्रद्धेय संत के कूड़ेदान में तब्दील होने की दास्तान कितनी लज्जाजनक है; यह बताने की आवयश्यकता नहीं है। किन्तु आश्चर्य तो तब हुआ; जब विश्व हिन्दू परिषद के महानायक ने आसाराम की गिरफ्तारी को हिन्दू धर्म का अपमान बताया। क्या श्रीराम जन्मभूमि के उद्धार कार्य में संलग्न महानायक यह बताने का कष्ट करेंगे कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र ने रावण को मृत्युदण्ड उसके किस अपराध में दिया था। रावण भी वेदज्ञ था, धर्मशास्त्रों का ज्ञाता था, महर्षि पुलस्त्य का नाती और विश्वश्रवा का पुत्र था। साधुवेश धारी रावण ने देवी सीता का अपहरण ही किया था; उसने देवी सीता का शीलहरण अथवा प्राण हरण नहीं किया था- फिर भी श्रीराम ने रावण के लिए मृत्युदंड ही निर्धारित किया था- मानो वे संसार को चेतावनी देना चाहते थे, ओ, दुनियावालो! कभी भी नारी का अपमान करने का दुस्साहस न करना!

जो नहिं दंड करौ सठ तोरा। भ्रष्ट होइ श्रुति मारग मोरा।

क्या श्रीराम ने रावण को मृत्युदंड देकर हिन्दूधर्म का अपमान किया था! तो फिर हिन्दू धर्म के समस्त घटकों को और विश्व हिन्दू परिषद के समस्त नेतृवर्ग को शाहजहाँपुर की उस बालिका के पक्ष में खुलकर खड़े न होना- क्या अधर्म नहीं है?

आज ज्ञानशक्ति और कर्मशक्ति के संकुचित संतुलन के कारण ही देश और प्रदेश अशान्ति की ज्वालाओं में दग्ध होने को विवश है। सत्ता और भूखनन माफिया की साठगाँठ से चलने वाले अवैधानिक कृत्यों को रोकने का बीड़ा जब साक्षात् दुर्गा नाम्नी कर्मशक्ति ने उठाया- तो उसे निलंबित करने वाले संकुचित ज्ञानशक्ति के प्रमुख (सुप्रीम) ने बयान दिया कि यदि निलंबन न किया जाता तो प्रदेश में साम्प्रदायिक दंगे हो जाते। सत्यनिष्ठ कर्मशक्ति को निलंबित करने वाले क्या यह बताने का कष्ट करेंगे कि निलंबन के बाद प्रदेश में दंगे क्यों हुए? पश्चिमी उ.प्र. में जब एक छात्रा को समुदाय विशेष के गुंडों ने छेड़ा तो तत्काल उन पर कार्यवाई क्यों नहीं की गई? अपनी बहन की रक्षार्थ आने वाले बंधुद्वय को समुदाय विशेष के गुंडों ने जब मौत के घाट उतार दिया था; तो आतताइयों को तत्काल क्यों नही रोका गया और दोषियों को उसी समय निरुद्ध क्यों नहीं किया गया?

ज्ञानशक्ति और कर्मशक्ति का यह द्वन्द्व आज का नहीं है; पुरातन काल से चला आ रहा है। मानव सभ्यता की विकास यात्रा में ज्ञानशक्ति और कर्मशक्ति के द्वन्द्व के आधार पर ही उत्थान-पतन की सीमाएँ तय होती रही हैं। उपनिषदों ने भी कभी विद्या और अविद्या, कभी सम्भूति और असम्भूति तो कभी ब्रह्म और क्षत्र के माध्यम से समाज में ज्ञानशक्ति और कर्मशक्ति की भूमिकाओं का विश्लेषण और विवेचन किया है-

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयँ सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते।।
(ईशावास्योपनिषद्)

वेदप्र. शास्त्री

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता १३४

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में सप्तम समुल्लास का अंश

ईश्वर सिद्धि

(प्रश्न) ईश्वर में प्रत्यक्षादि प्रमाण कभी नहीं घट सकते।

(उत्तर) "इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यपदेश्यमव्यभिचारिव्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम्।।" यह गौतम महर्षि कृत न्याय दर्शन का सूत्र है- जो श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, जिव्हा, घ्राण और मन का शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, सुख, दुःख, सत्यासत्य विषयों के साथ सम्बन्ध होने से ज्ञान उत्पन्न होता है उसको प्रत्यक्ष कहते हैं परन्तु वह निर्भ्रम हो।

अब विचारना चाहिये कि इन्द्रियों और मन से गुणों का प्रत्यक्ष होता है गुणी का नहीं। जैसे चारों त्वचा आदि इन्द्रियों से स्पर्श, रूप, रस और गन्ध का ज्ञान होने से गुणी जो पृथिवी उसका आत्मायुक्त मन से प्रत्यक्ष किया जाता है, वैसे इस प्रत्यक्ष सृष्टि में रचना विशेष आदि ज्ञानादि गुणों के प्रत्यक्ष होने से परमेश्वर का भी प्रत्यक्ष है।

और जब आत्मा मन और मन इन्द्रियों को किसी विषय में लगाता वा चोरी आदि बुरी वा परोपकार आदि अच्छी बात के करने का जिस क्षण में आरम्भ करता है, उस समय जीवन की इच्छा, ज्ञानादि उसी इच्छित विषय पर झुक जाता है। उसी क्षण आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में भय, शंका और लज्जा तथा अच्छे कामों के करने में अभय, निःशंकता और आनन्दोत्साह उठता है। वह जीवात्मा की ओर से

नहीं किन्तु परमात्मा की ओर से है।

और जब जीवात्मा शुद्ध होके परमात्मा का विचार करने में तत्पर रहता है उसको उसी समय दोनों प्रत्यक्ष होते हैं। जब परमेश्वर का प्रत्यक्ष होता है तो अनुमानादि से परमेश्वर के ज्ञान होने में क्या संदेह है? क्योंकि कार्य को देख के कारण का अनुमान होता है।

(प्रश्न) ईश्वर व्यापक है वा किसी देशविशेष में रहता है?

(उत्तर) व्यापक है, क्योंकि जो एक देश में रहता तो सर्वान्तर्यामी, सर्वज्ञ, सर्वनियन्ता, सब का स्रष्टा, सब का धर्त्ता और प्रलयकर्त्ता नहीं हो सकता। अप्राप्त देश में कर्त्ता की क्रिया का असम्भव है।

(प्रश्न) परमेश्वर दयालु वा न्यायकारी है वा नहीं?

(उत्तर) है।

(प्रश्न) ये दोनों गुण परस्पर विरुद्ध हैं। जो न्याय करे तो दया और दया करे तो न्याय छूट जाय। क्योंकि न्याय उसको कहते हैं जो कर्मों के अनुसार न अधिक न न्यून सुख दुःख पहुंचाना और दया उसको कहते हैं जो अपराधी को बिना दण्ड दिये छोड़ देना।

(उत्तर) न्याय और दया का नाममात्र ही भेद है क्योंकि जो न्याय से प्रयोजन सिद्ध होता है वही दया से। दण्ड देने का प्रयोजन है कि मनुष्य अपराध करने से बन्ध होकर दुःखों को प्राप्त न हों वही दया कहाती है जो पराये दुःखों का छुड़ाना और जैसा अर्थ दया और

(शेष पृ ३ पर......)

वेदांजलि

प्रथमा संस्कृति

❑ पं. शिव कुमार शास्त्री
भू.पू. संसद सदस्य

अच्छिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्यस्य रायस्पोषस्य ददितारः स्याम।
सा प्रथमा सँस्कृतिर्विश्ववारा स प्रथमो वरुणो मित्रोऽअग्निः।।
–यजु: 7/14

शब्दार्थ-

हे **(देव सोम)** दिव्यगुणयुक्त, चराचर जगत् के रचयिता! **(सुवीर्यस्य)** महान् बलयुक्त **(ते)** आपके **(अच्छिन्नस्य)** अखण्ड, अक्षय **(रायस्पोषस्य)** ज्ञानैश्वर्य के परिपोषक [और] **(ददितारः स्याम)** देनेवाले, प्रचार करनेवाले हम सदा रहें। **(सा)** वह **(प्रथमा)** सबसे पहली और उत्तम **(विश्ववारा)** सम्पूर्ण संसार के द्वारा स्वीकार करने योग्य **(संस्कृतिः)** विद्या-सुशिक्षाजनित नीति, व्यवहारपद्धति है, **(वरुणः)** वरने योग्य, स्वीकार करने योग्य **(अग्निः)** प्रकाशस्वरूप **(सः)** वह, आप **(प्रथमः)** आदिमूल और उत्कृष्ट **(मित्रः)** हितभावना से त्राण करनेवाले, प्राणिमात्र का कल्याण करने वाले आप ही हैं।

व्याख्या-

मंत्र में कहा गया है कि इस चाराचर जगत् का आदिमूल, अक्षय ज्ञानैश्वर्य का भण्डार सच्चे मित्र के समान हितसाधक वह प्रभु ही है। उसीने हमारे संसार में आते ही अपनी सर्वोत्कृष्ट संस्कृति लोक और परलोक साधने के लिए हमें दी। हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने और समाज के कल्याण के लिए उस उत्तम धर्ममार्ग को अपनाकर संसार को सन्ताप से बचावें।

जिन परिष्कृत भावनाओं और संस्कारों के आधार पर समाज में मनुष्य अपने व्यवहार से इस प्रकार के उदाहरण प्रस्तुत करता है कि जिसमें व्यक्ति का केवल अपना स्वार्थ सिद्ध न होकर मानवमात्र का और यथासम्भव प्राणिमात्र का हित हो, उन विचार-परम्पराओं का नाम ही संस्कृति है। संस्कृति-पदवाच्य उत्कृष्ट गुण, व्यक्ति में स्वतः उत्पन्न नहीं होते, अपितु सुशिक्षित अनुभवी माता, पिता, गुरु और समाज के वयोवृद्ध व्यक्तियों की प्रारम्भ से ही प्राप्त होनेवाली सुशिक्षा के परिणामस्वरूप उत्पन्न होते हैं।

छोटे बच्चे को कोई भी वस्तु दीजिये, यदि वह उसके हाथों की पकड़ में है तो तुरन्त पकड़कर अपने मुँह की ओर ले जाएगा। कुछ बड़ा होने पर वही बालक जिन्हें अपना समझने लगता है, उन्हें अपनी प्रिय वस्तु भी देने लगता है। ये ही विचार आयु के साथ मस्तिष्क के विकसित होने पर उत्तरोत्तर बढ़ते हैं और इनके आधार पर ही परिवार, वर्ग और समाज के भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के साथ व्यवहार के कुछ नियम नियत होते जाते हैं, इन्हें ही एक उन्नत समाज की भाषा में संस्कृति कहा जाता है।

इस विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि अपने के लिए व्यक्ति अपने स्वार्थ की उपेक्षा करके त्याग करने को उद्यत हो जाता है। इस त्याग के परिणामस्वरूप हुई अपनी हानि से और दूसरे के लाभ से उसे दुःख न होकर सुख होता है। इतने उदात्त मानवीय गुणों से अनुप्राणित कोई भी समाज और राष्ट्र सुसंस्कृत और महान् कहलाता है।

समाज और देश की उन्नत और अवनत दशा को मापने का एक ही मापदण्ड है और वह है संस्कृति। संस्कृति की उल्लिखित परिभाषा के आधार पर जब हम वैदिक संस्कृति से अनुप्राणित भारत के अतीतकाल को देखते हैं, तो स्वाभिमान से मस्तक उन्नत हो जाता है। वैदिक संस्कृति में जीवन-यापन का जो उच्च आदर्श रक्खा है, वह संसार को स्वर्गधाम बनानेवाला है।

वेद ने मनुष्य की तो बात ही क्या है, प्राणिमात्र को आत्मतत्त्व की दृष्टि से अपना बताया है-

यस्मिन्त्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः।।

'जो ज्ञानी समस्त प्राणियों के सुख-दुःख को अपने सुख-दुःख जैसा समझता है, उस समदर्शी मनुष्य को शोक और मोह नहीं होता।' इसी मंत्र के भाव को आधार पर गीता में कहा-

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गविहस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः।।

'विद्वान् ब्राह्मण, गौ, हाथी, कुत्ते और चाण्डाल में समान रूप से सुख-दुःख अनुभव करनेवाला आत्मा तो एक-जैसा ही है।' महाभारत में व्यास ऋषि ने धर्म का मुख्य स्वरूप बताते हुए कहा-

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषान्न समाचरेत्।।

'धर्म का सार सुनो और सुनके उस पर आचरण करो। वह तत्त्व की बात यह है कि जिस आचरण को तुम अपने लिए पसन्द नहीं करते, उसे दूसरों के साथ कभी मत करो।'

रघुवंश में रघु के राज्य का वर्णन करते हुए कालिदास लिखते हैं कि जब रघु के पुत्र का जन्म हुआ तो पुत्र-प्राप्ति की प्रसन्नता में महाराज ने आदेश दिया कि आज के दिन हमारे बन्दीगृहों में जितने भी बन्दी हों उन्हें राजकुमार के जन्मोत्सव की प्रसन्नता में छोड़ दिया जाय। इस पर कालिदास लिखते हैं-

'न संयतस्तस्य बभूव रक्षि-
तुर्विसर्जयेद्यं सुतजन्महर्षितः।'

-'प्रजा के रक्षक रघु के राज्य में जेलखानों में कोई बन्दी नहीं था, जिसे बन्धनमुक्त करके वह पुत्रोत्सव में वृद्धि कर लेता।' इस कारण कुछ हाथियों की शृंखलाएँ कटवा कर तथा कुछ घोड़ों के रस्से खुलवाकर उन्हें स्वतंत्र करके पुत्रोत्सव को मनाया।

अतः मंत्र में कहा गया है कि इस प्रथमा संस्कृति के आधार पर ही विश्व में सुख और शान्ति स्थापित हो सकती है।

(श्रुति सौरभ से साभार)

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-६६

किमर्थं वाग्मित्वं तरलहृदयत्वं च किमु मे
प्रगाढा श्रद्धा च त्वयि हतफलाऽरण्यरुदितम्।
तवाभावे स्नेहं मधुरवचनं लाडयतु कः
विलम्बदायाते मयि कियदहो कष्टजनकम्।।

मुझे यह कहाँ पता था कि
तुम्हारे चले जाने के बाद
दुनिया में आने पर मुझे
इतना कठोर कष्ट मिलेगा।
मेरी वाग्मिता का अब अर्थ ही
क्या रह गया है ?
मेरे मन की संवेदनशीलता
किस काम आयी ?
तुम्हारे प्रति मेरी गाढ़ी श्रद्धा भी अरण्य-रोदन ही लगी।
जब तुम ही नहीं हो तो मेरे
इन गुणों के लिए मुझ से
कौन प्यार करेगा और
मीठे वचन कहकर कौन लाड जतायेगा ?

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

सत्संग

जिज्ञासा और समाधान

जिज्ञासा :

'आर्य्य लोक वार्ता' में मुखपृष्ठ पर 'आर्य्य' शब्द प्रयुक्त है; जबकि आमतौर से 'आर्य' शब्द प्रचलन में है। 'आर्य्य' तथा 'आर्य' में क्या अन्तर है? दोनों में कौन सही है, जिसको व्यवहार में लाया जाय। कृपया जिज्ञासा का समाधान करें।

-डॉ. भानुप्रकाश आर्य, पूर्व चिकित्साधिकारी, राजकीय आयुर्वेद कालेज, टूंडियागंज, लखनऊ

समाधान :

'आ र् य' -यहाँ 'आ' के पश्चात् 'र्' है, उसके पश्चात् 'य' है। यहाँ पर श्री पाणिनि आचार्य के सूत्र "अचोरहाभ्यां द्वे" के अनुसार, जिसका अर्थ है यदि 'अच्' अर्थात् स्वर के पश्चात् 'र्' या 'ह्' हों तो उसके पश्चात् 'यर्' अर्थात् 'य, व, र, ल, श, ष, स्' हों तो इन वर्णों का विकल्प से अर्थात् इच्छानुसार द्वित्व अर्थात् दो वर्ण हो जाते हैं। जैसे 'आ' स्वर है, उसके पश्चात् 'र्' है तथा उसके बाद वाले 'य' को हम इच्छानुसार दो 'य्' अर्थात् 'आर्य्य' बोलेंगे अथवा 'आर्य' बोलेंगे। यहाँ पर छूट है। कोई बन्धन नहीं है। 'अचोरहाभ्यां द्वे" सूत्र अष्टाध्यायी के आठवें अध्याय के चौथे पाद का ४५वाँ सूत्र है।

-आचार्य ओजोमित्र शास्त्री, व्याकरणाचार्य

विशेष : भाषा में सामान्य शब्द को विशिष्ट बनाने की व्यवस्था की जाती है। 'आर्य' शब्द पर विशेष बल देने के लिए 'आर्य्य' शब्द का प्रयोग प्रारंभ में आर्य समाजों में प्रायः किया जाता था। एक समय था, जब 'आर्यमित्र' में मुखपृष्ठ पर 'आर्य्य मित्र' ही छपता था। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित 'सत्यार्थ प्रकाश', 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' इत्यादि के प्राचीन संस्करणों को देखें तो महर्षि ने प्रायः 'आर्य्य भाषा' प्रयोग किया है। यह प्रयोग व्याकरण-सम्मत है।

जहाँ तक 'आर्य' शब्द का संबन्ध है- यह अपने आप पूरी तरह सही है। जैसा ऊपर कहा गया है।, यह सर्वथा ऐच्छिक है। हिन्दी भाषा की गति सरलता की ओर है, इस दृष्टि से 'आर्य' शब्द व्यवहृत होता है। 'आर्य्य लोक वार्ता' में 'आर्य्य' शब्द को सामान्य से विशिष्ट बनाने के अभिप्राय से तथा महर्षि के प्रयोगों को सुरक्षित रखने की दृष्टि से 'आर्य्य' शब्द प्रकाशित होता है। जिज्ञासा हेतु आपको धन्यवाद। *-संपादक*

जिज्ञासा :

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों का भाष्य कहाँ तक किया है?

-डॉ.शान्तिदेव बाला, प्रख्यात वेद विदुषी, महानगर, लखनऊ

समाधान :

१. महर्षि दयानन्द सरस्वती ने यजुर्वेद का सम्पूर्ण भाष्य किया है तथा ऋग्वेद का सातवें मंडल के ६१वें सूक्त के द्वितीय मंत्र तक भाष्य किया है- जो मुद्रित है।

२. महर्षि ने संवत् १९३० में साक्षात्कृत धर्मा होकर चारों वेदों के प्रत्येक मंत्र पर एक ग्रन्थ तैयार किया, इसका नाम है- 'चतुर्वेद विषय सूची'। इस ग्रंथ में चारों वेदों तथा उपलब्ध वेदों की शाखाओं तथा ब्राह्मण ग्रंथों आदि का भी समावेश किया गया है।

३. महर्षि ने चारों वेदों पर यह मौलिक भाष्य पूरा अपने जीवन रचकर

(पृष्ठ 1 का शेष.....)

आर्य समाज ने....

को झेलते हुए एक वर्ष की जेल काटी। घर की हालत बहुत चिन्ताजनक थी। १९४२ में भारत छोड़ो आन्दोलन में जेल गये। १९४६ में उ.प्र. के विधायक तथा स्वतंत्र भारत में पुलिस मंत्री बने, १९५२ में बहुत कुशल रेलमंत्री बने। १९५८ में उद्योग मंत्री, १९६१ में पन्त जी के निधन के पश्चात गृहमंत्री बने। २७ मई, १९६४ को पं.जवाहरलाल नेहरू के देहान्त के पश्चात् पूरे १८ मास तक भारत के हृदय सम्राट प्रधानमंत्री बने रहे। १९६५ में पाकिस्तान युद्ध में बहुत उदारता और वीरता का परिचय दिया। युद्ध में पाकिस्तान को हराकर रूस के प्रधानमंत्री श्री कीसीगिन के झांसे में आकर सन्धि पर हस्ताक्षर करके १० जनवरी, १९६६ को कलुषित षडयन्त्र के अत्याचार में फंस कर अमर स्वर्गारोही बन गए। आपको शतशः नमन है।

('ओम् सुप्रभा' वर्ष ६, अंक २ से साभार)

तैयार कर लिया था। इस दृष्टि से वे चारों वेदों का मौलिक वेदभाष्य हमें पूर्ण दे गये हैं, अतः हमारी दृष्टि में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज चतुर्वेद भाष्यकार हैं।

४. 'चतुर्वेद विषय सूची' के निर्माण के पश्चात् महर्षि ने 'ऋग्वेद का विस्तृत वेदभाष्य' का एक नमूना छपवाया। यह छपा मिलता है।

५. ऋग्वेद के बहुत से सूक्तों पर महर्षि का किया हुआ विस्तृत भाष्य परोपकारिणी सभा के पास रखा है, जो अभी तक अमुद्रित है।

-आचार्य विश्वश्रवा द्वारा लिखित 'महर्षि दयानन्द सरस्वती के ग्रंथों के प्रामाणिक संस्करण' के आधार पर

(पृष्ठ 2 का शेष.....)

सत्यार्थ प्रकाश.....

न्याय का तुमने किया वह ठीक नहीं क्योंकि जिसने जैसा जितना बुरा कर्म किया हो उसको उतना वैसा ही दण्ड देना चाहिये, उसी का नाम न्याय है। और जो अपराधी को दण्ड न दिया जाय तो दया का नाश हो जाय। क्योंकि एक अपराधी डाकू को छोड़ देने से सहस्रों धर्मात्मा पुरुषों को दुःख देना है। जब एक के छोड़ने में सहस्रों मनुष्यों को दुःख प्राप्त होता है वह दया किस प्रकार हो सकती है? दया वही है कि उस डाकू को कारागार में रखकर पाप करने से बचाना डाकू पर और उस डाकू को मार देने से अन्य सहस्रों मनुष्यों पर दया प्रकाशित होती है।

(-क्रमशः)

('वाचनालय से का शेष.....)

अल-शबाब के आतंकियों ने लोगों से अपनी पहचान बताने को कहा। वे गैर मुस्लिम की पहचान के लिये लोगों से धर्म सम्बन्धित सवाल पूछ रहे थे या कलमा पढ़ने को कह रहे थे। ब्रिटिश अखबार गार्जियन ने एक ईसाई जोशुआ हाकिम के हवाले से बताया कि उन्होंने अपने पहचान पत्र में ईसाई नाम को अंगूठे से छुपाते हुए आतंकियों को दिखाया, जिसके बाद उन्हें जाने दिया गया। इसके बाद एक भारतीय की बारी आयी। आतंकियों ने उनसे पूछा कि पैगम्बर मुहम्मद की माँ का नाम क्या है? जवाब ने दे पाने पर उन्होंने उसे गोली मार दी। •

वाचनालय से

'स्वामी अग्निवेश की दृष्टि में कावड़ अधर्म तो रोज़े धर्म कैसे?' शीर्षक सम्पादकीय के माध्यम से धर्मवीर पाक्षिक **'परोपकारी'** (अजमेर) में लिखते हैं कि भारत में ही नहीं संसार में धर्म के नाम पर बड़ी संख्या में किये जाने वाले अनुष्ठानों में 'कावड़' भी एक बड़ा अनुष्ठान बन गया है। लाखों लोग गंगा से अपने निकट के नदी, सरोवरों से जल लेकर शिव मन्दिर में चढ़ाते हैं और समझते हैं कि ऐसा करने से उनकी मनोकामना पूरी होगी। यह धारणा भी सभी रूढ़िवादी धारणाओं की भांति अन्धविश्वास है, इस में दो मत नहीं हैं।...स्वामी अग्निवेश ठीक कहते हैं। राजनेता कांवड़ियों की संख्या अथवा अनके मार्ग को नियंत्रित करने के बदले उनका मार्ग प्रशस्त करते हैं और आगे बढ़कर अपने वोट बैंक की खातिर अन्धविश्वास को बढ़ावा देते हुए कावड़ियों की आवभगत के लिये पूरी-कचौड़ी खिलाते हैं।...स्वामी अग्निवेश कावड़ियों को बड़-पीपल लगाने का परामर्श देते हैं तथा केदारनाथ व रामगड़ा में भक्तों के शवों का अग्नि संस्कार करने की प्रेरणा देते हैं। भक्तों को वे यह भी बताते हैं कि केदारनाथ में कावड़ियों के देवाधिदेव महादेव खुद मलवे में दबे पड़े हैं, फिर किस महादेव पर जल चढ़ाकर कावड़िये अपना मनोरथ पूरा करने जा रहे हैं। (वैदिक सार्वदेशिक, ७ अगस्त २०१३)। धर्मवीर लिखते हैं कि स्वामी अग्निवेश का कथन शत-प्रतिशत सत्य है। केदारनाथ में महादेव जी का मन्दिर मलबे में दबा है। परन्तु उन्होंने अजमेर की या भारत भर की दरगाह में जाने वालों के भगवान-देवता कहाँ दबे पड़े हैं और उनके दुआ मांगने वाले लाखों लोग सारे नागरिकों की असुविधा बढ़ाते हैं और सरकार का करोड़ों, अरबों रुपये उनकी व्यवस्था पर व्यय होता है।

धर्मवीर लिखते हैं कि इन अवसरों के लिये भी स्वामी अग्निवेश के ऐसे वक्तव्य की प्रतीक्षा रहती है, परन्तु उनका प्रेम हिन्दुओं के लिये ही उमड़ता है। वे अपने परामर्श को मुसलमानों के लिए सम्भवतः उपयोगी नहीं मानते अन्यथा समाचार-पत्र के इसी अंक के पृष्ठ चार पर मौलवियों के साथ ३० जुलाई २०१३ को रोज़ा इफ्तार करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। यदि मुसलमानों के अनुष्ठान में भागीदारी उचित है, तो हिन्दुओं का इसी आधार पर विरोध क्यों? मुसलमानों के साथ रोज़ा इफ्तार करना राजनेताओं की वैसी ही मजबूरी है, जैसे कावड़ियों की खातिरदारी करने की। परन्तु कावड़ यात्रा का खण्डन करने वाले स्वामी अग्निवेश रोज़ा-इफ्तार का औचित्य कैसे सिद्ध करेंगे?

'ट्यूनीशिया के लिये बड़ी समस्य बनीं सीरिया में सेक्स-जिहाद करने वाली लड़कियाँ' यह समाचार दिया है **'दैनिक भास्कर'** ने। पत्र के अनुसार गृहयुद्ध की आग में झुलस रहे सीरिया में अब सेक्स-जिहाद ने भी जोर पकड़ लिया है। पड़ोसी देश ट्यूनीशिया की लड़कियाँ और महिलाएँ लड़ाकों की सेक्स जरूरत को पूरा करने के लिए सीरिया जा रही हैं। यह चौंकाने वाला खुलासा ट्यूनीशिया सरकार के गृहमंत्री लोफी बेन ने किया है। उन्होंने नेशनल असेम्बली के सदस्यों को बताया कि सीरिया में विद्रोहियों को यौन सुख देने के बाद ट्यूनीशियाई महिलाएँ वापस गर्भवती होकर मुल्क लौट आती हैं। एक महिला २०, ३० और १०० मर्दों के साथ सेक्स सम्बन्ध बनाती है। इस काम को 'जिहाद अल-निकाह' (सेक्सुअल होली वॉर) के नाम पर वैध करार देने की कोशिश की जा रही है।

'जिहाद अल-निकाह' किसी भी महिला को विवाहेत्तर यौन सम्बन्ध बनाने और कई पार्टनर के साथ सोने की छूट देता है। हैरानी की बात है कि सुन्नी कट्टरपंथी मुस्लिमों ने भी इसे पवित्र युद्ध के रूप में इजाजत दे दी है। ऐसी कितनी महिलाएँ इस मिशन में लगी हुई हैं, इसका मंत्री बेन ने खुलासा नहीं किया। लेकिन मीडिया रिपोर्ट के अनुसार करीब १०० महिलाएँ सीरिया में अपनी सेवाएँ दे रही हैं।

साप्ताहिक **'आर्य मित्र'** (लखनऊ) ने पूरे एक पृष्ठ पर इन्द्रदेव गुलाटी का विज्ञप्तिनुमा लेख 'हिन्दी दिवस दिनांक १४/०९/१३' प्रमुखता से प्रकाशित किया है। इन्द्रदेव गुलाटी लिखते हैं कि १४ सितम्बर १९४९ को संविधान सभा ने हिन्दी को स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा बनाने का प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित किया किन्तु अंग्रेजी को २६ जनवरी १९६५ तक राष्ट्रभाषा के रूप में बनाये रखने की सहमति दी। अहिन्दी भाषी प्रदेशों के नेता भी सहमत थे। चूंकि हिन्दी को उसका उचित स्थान दिलाने के लिए सभी स्तरों पर अच्छे ढंग से प्रयास नहीं किये गये इसलिये दक्षिणी राज्यों के दबाव में आकर नेहरू सरकार ने अंग्रेजी को अनिश्चित काल के लिये देश्या की सह राष्ट्रभाषा का दर्जा कानून बनाकर दे दिया। देश में २८ राज्य हैं, जिसमें हिन्दी भाषी राज्यों की संख्या नौ है। बिहार झारखण्ड तथा उत्तरप्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा का दर्जा दे दिया गया है।

इन्द्रदेव गुलाटी लिखते हैं कि महाराष्ट्र में राज ठाकरे तथा उद्धव ठाकरे के दल हिन्दी भाषियों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं, जो निन्दनीय है। जबकि वीर सावरकार आदि सदैव हिन्दी के प्रबल समर्थक रहे और देश का महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय १९९७ में राज्य के वर्द्धा शहर में खोला गया।

पिछले कई वर्षों से यह देखने में आ रहा है कि हिन्दी भाषी राज्यों में अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों व कॉलेजों की बाढ़ सी आ गई है।...उत्तर प्रदेश सबसे बड़ा हिन्दी प्रदेश है। मुलायम सिंह हिन्दी के प्रबल समर्थक हैं किन्तु हिन्दी प्रेमियों समर्थकों का कोई बड़ा अथवा प्रभावशाली संगठन नहीं है, इसलिये यहाँ अरबी फारसी को बढ़ावा दिया जा रहा है। अब केन्द्र सरकार अलीगढ़ विश्वविद्यालय की ५ शाखायें अन्य राज्यों में खोल रही है जहाँ इण्टर बी.ए. में उर्दू पढ़ना अनिवार्य है। सरकारी पैसों से मुलायम सिंह ने रामपुर में और मायावती ने लखनऊ में विश्वविद्यालय बनवाये हैं, जहाँ उर्दू-फारसी-अरबी को महत्व दिया जायेगा। इन चारों विश्वविद्यालयों में हिन्दी को कोई स्थान नहीं मिलेगा। इन्द्रदेव गुलाटी लिखते हैं कि हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल नहीं है। हिन्दी प्रेमी समर्थक संगठित होकर राज्य के अहिन्दीकरण को रोकें।

'दैनिक जागरण' ने समाचार दिया है कि नौरोबी के मॉल में सोमालियाई आतंकियों ने इस्लाम सम्बन्धी सवाल का जवाब नहीं देने पर एक भारतीय को गोली मार दी। मीडिया रिपोर्टों में कहा गया है कि सोमालियाई आतंकी संगठन

(शेष इसी पृष्ठ पर बांयी ओर.....)

www.thearyasamaj.org

शुभाकांक्षा

अंक २-३ अगस्त-सितम्बर २०१३

में पिछले जुलाई २०१३ के 'विनय पीयूष' अन्तर्गत पुनर्प्रकाशित मंत्र के काव्यानुवाद का अन्तर प्रथम चरण के 'में' को 'से' से किया गया है। इस बदलाव से मूल भावना पर स्पष्ट प्रभाव पड़ा है।

'में' की स्थिति यह कहती है कि यह जगत संसार था और वह (ईश्वर) इस जगत में विद्यमान था। 'से' द्वारा यह बातया गया है कि ईश्वर जग को इस स्थिति में आने के पूर्व भी विद्यमान था। सृष्टि की रचना उसी ने की। इसके न होने पर भी वह था। यहाँ यह भी कहना है कि वैदिक त्रैतवाद अंतर्गत (अथ.६/६/२०) सारी वस्तुएँ ईश्वर, जीव व प्रकृति विद्यमान होते हुए भी मूल अवस्था में थे। उस प्रकृति की विकृति से जगत बना जीव गाढ़ी निद्रा व सुषुप्तावस्था में थे।

-कौशल किशोर श्रीवास्तव

भीष्म भवन, २६८/३६, नया तिलकनगर, लखनऊ

***

'आर्य्य लोक वार्ता' का जुलाई २०१३

अंक कविमित्र श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' के सौजन्य से प्राप्त हुआ। मनोयोग से पढ़ा। अंक में दी गई विषय वस्तु की भाषा शैली एवं चिन्तन स्तरीय है। धारावाहिक शृंखला के रूप में 'मनुष्य का विराट रूप' पढ़कर अच्छा लगा। इसमें श्री आनन्दकुमार का शोध विद्वत्तापूर्ण है। 'काव्यायन' की रचनायें सामयिक, रोचक एवं सशक्त हैं। वैदिक विषयों के अन्तर्गत सामाजिक कार्यों के समाचार ज्ञानवर्धन में सहायक हैं। इस पत्र में यदि बच्चों के लिए भी कुछ स्थान दिया जाय तो उनको सुसंस्कार देने में उपयोगी होगा। इस पत्र की प्रगति हेतु मेरी अमित शुभ कामनायें।

-राजभइया गुप्ता 'राजाभ'

बी-२/३५६, से.-ए, जानकीपुरम, लखनऊ

***

हमारे वैवाहिक जीवन की साठवीं

वर्षगांठ 'हीरक जयन्ती' का समाचार अपने प्रतिष्ठित पत्र 'आर्य लोक वार्ता' के गत जुलाई अंक में प्रकाशित करने पर मैं आपका हृदय से आभारी हूँ। अस्वस्थ होने के कारण मैं तुरन्त आपको कृतज्ञता ज्ञापन नहीं भेज सका। इस विलम्ब के लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। Better late than never.

-नन्दन लाल अग्रवाल

सदर बाजार, झांसी

***

'आर्य लोक वार्ता' अगस्त-सितम्बर अंक में हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में आचार्य विष्णु प्रभाकर के आलेख ने मुझे अत्यंत प्रभावित किया। आधुनिक भारत के निर्माता के रूप में स्वामी दयानन्द का योगदान चिरस्मरणीय है। 'सत्यार्थ प्रकाश' जैसी अमर कृति हिन्दी में रचकर तथा प्रचार-प्रसार द्वारा हिन्दी को राजभाषा बनाने के सद्प्रयास कर उन्होंने निष्काम हिन्दी सेवा की है। महात्मा गांधी जैसे देशप्रेमियों ने स्वामी जी के विचारों का सम्मान करते हुए उन्हें हृदय से अंगीकार भी किया। यह स्वर गांधी

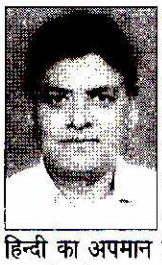

जी के चिन्तन और चरित्र से ध्वनित होता रहा है किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सत्तालोलुप राजनेताओं ने देश वासियों से छल करके हिन्दी का अपमान किया और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव वश आंग्लभाषा को बढ़ावा दिया। देश के लिए सचमुच यह दुर्भाग्यपूर्ण विषय है। सम्पादकीय में 'संध्योपासना' द्वारा आपने वैदिक ध्यान की वैज्ञानिकता सिद्ध की है जो जन सामान्य के लिए सर्वथा प्रेरक एवं उपचयोगी है। इसी प्रकार अन्य वैदिक तथ्यों को विज्ञान सम्मत रूप में प्रदान करें तो कृपा होगी। 'वाचनालय से' स्तम्भ में 'नरभक्षी पी रहे हैं बेबी सूप' समाचार से मन आहत हो गया। प्राचीन काल में 'राक्षसों' की परिकल्पना इन्हीं कृत्यों से की जा सकती है। 'काव्यायन' में श्री दिनेश मिश्र 'राही', डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर तथा शिवबहादुर सिंह भदौरिया की कवितायें प्रभावपूर्ण हैं। अंक में अन्य स्तम्भों में प्रदत्त विषय वस्तु प्रेरक एवं मननीय है। 'आर्य लोक वार्ता' के दिव्यालोक में आदिशक्ति की अपरिमित ऊर्जा को संघीभूत करते हुए हम ऊर्ध्वगामी विकास को प्राप्त करें। यह सद्कामना है।

संकल्प लेकर जन जुटें, नव राष्ट्र के निर्माण में।
पाश्चात्य संस्कृति त्यागकर, स्वर-वेद भर लें प्राण में।
स्वामी दयानन्द ने बताया, मार्ग शिव-शुभ-सत्य का
है ईश कण-कण में बसा, क्यों खोजते पाषाण में।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

११७, आदिलनगर, रिंगरोड, लखनऊ -२२६०२२

***

आपने मुझे दो पुस्तकें- 'अमृत पुत्रो सुनो!' तथा 'आत्मबोध उपदेशामृत' भेंट की थीं। दोनों ही पुस्तकें अमूल्य हैं। आपने अपनी पुस्तक 'अमृत पुत्रो, सुनो!' में गागर में सागर भर दिया है। आपने शृण्वन्त विश्वे अमृतस्य पुत्राः को सार्थक कर दिया है और स्वामी विवेकानन्द जी का उदाहरण देकर और सुन्दर बना दिया है। पुस्तक में अध्यात्म से लेकर राजनीति आदि सभी पहलुओं को अभिसिंचित किया है। अध्यात्म तो इतना सुन्दर है कि अभी आर्य समाजों में उसका स्वाध्याय होना चाहिए क्योंकि हम समाज में संध्या हवन अवश्य करते हैं परन्तु उसका अर्थ नहीं जानते हैं। अतः अर्थ जबतक नहीं जाने जायेंगे तब तक उसका कोई लाभ नहीं है। अस्तु विषय तो बहुत हैं जिनपर आपने प्रकाश डाला है।

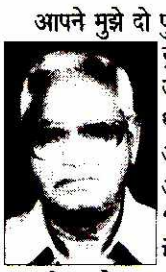

-नरदेव आर्य

भिवानी (हरियाणा)

***

'आर्य लोक वार्ता' अगस्त-सितम्बर अंक के पृथम पृष्ठ पर आचार्य विष्णु प्रभाकर का लेख 'स्वामी दयानन्द ने १९वीं शताब्दी में ही समझ लिया था कि हिन्दी ही होगी देश की राजभाषा' क्योंकि वे एक सफल मनोवैज्ञानिक दूरदृष्टा थे, इसीलिए प्रथम तो उन्होंने स्वयं भी हिन्दी के सीखने, पढ़ने, बोलने में अथक प्रयत्नशील रहे और देश की जनता को भी प्रेरणा देते रहे और उन्होंने पूर्ण सफलता हासिल की। जीवन के अन्तिम क्षण तक हिन्दी के प्रचार प्रसार में संलग्न रहे जबकि स्वामी जी की मातृभाषा गुजराती थी।

सम्पादकीय में वैदिक ध्यान योग बहुत

प्रभावपूर्ण है। सत्य ही है इस शरीर संचालन में कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों को एक नियंत्रक की आवश्यकता होती है। अतः उस परम पिता परमात्मा से अच्छा कौन नियंत्रक हो सकता है, क्योंकि वह हमेशा हमारे साथ है और संध्योपासना के माध्यम से हम नित्य सुबह और शाम उसके समीप होते हैं और वह नित्य हमारा मार्गदर्शन करता है। तब हम सही पथानुगामी होते हैं और जीवन की भटकन में नहीं फंसते।

'वेदांजलि' में शिवकुमार शास्त्री का चयनित मंत्र देश की वर्तमान परिस्थिति में बहुत ही सशक्त है। देश को एकजुट मजबूत बनाने में समृद्ध करने के महत्वपूर्ण गुर बताये गये हैं जो अनुकरणीय हैं। श्री आनन्दकुमार जी का धारावाहिक 'मनुष्य का विराट रूप' बहुत ही शिक्षाप्रद और सराहनीय होता है। उन्होंने एक पौराणिक कथा के माध्यम से बताया है कि न्यायपूर्ण अधिकार किसी को कैसे प्राप्त है। यह एक सत्य की कसौटी पर ही सच्चा पारखी परख सकता है कि अधिकार पाने का कौन अधिकारी है? अमृत खरे जी ने कुछ खोजपूर्ण तथ्य 'वाचनालय से' में दिखाये हैं जो अत्यंत चौंकाने वाले हैं।

'काव्यायन' में सभी कवितायें महत्वपूर्ण हैं। फिर भी डॉ.कैलाश निगम की कविता वर्तमान परिस्थियों को स्पष्ट करती है। डा.मिर्जा हसन नासिर की कविता उत्तराखंड त्रासदी उत्तराखंड का हूबहू दिग्दर्शन कराती है। इसके अलावा गौरी शंकर वैश्य विनम्र की कविता दुर्गाशक्ति सशक्त और प्रभावशाली है। इसमें ओज है, प्रवाह है। अन्यायी विश्वासघातियों को सबक सिखाने का प्रयास किया है इसके लिए साधुवाद।

-प्रमोद कुमारी

एम.एस.३७, अलीगंज, से-डी, लखनऊ

***

यों तो तमाम पत्र-पत्रिकाएँ रोजाना

आँखों के सामने से गुजरती रहती हैं, किन्तु 'आर्य लोक वार्ता' का प्रत्येक अंक मुझे सबसे ज्यादा प्रिय है। 'आर्य लोक वार्ता' के सभी स्तम्भ रोचक और नई जानकारियों से भरे होते हैं; किन्तु 'विनय पीयूष', 'वाचनालय से' और 'अक्षरलोक' तथा 'काव्यायन' तो इतने मौलिक हैं; कि इन्हें अतुलनीय ही कहा जा सकता है।

यह सब होते हुए 'आर्य लोक वार्ता' के प्रति मेरी दिलचस्पी का मूलभूत कारण इसमें धारावाहिक रूप में प्रकाशित होने वाला स्तंभ- 'सत्यार्थ प्रकाश वार्ता' है। मैं पृथक् रूप से तो इस ग्रंथ को नहीं पढ़ पाया हूँ मगर 'आर्य लोक वार्ता' में इसके धारावाहिक अंश को पढ़कर मेरा मन प्रफुल्लित हो आश्वस्त हो जाता है। मेरे मन को जो सन्तुष्टि 'सत्यार्थ प्रकाश' के 'आर्य लोक वार्ता' में प्रकाशित होने वाले अंशों को पढ़कर होती है, वह संतुष्टि अन्यत्र कहीं नहीं मिलती है। सम्पादक, प्रकाशक धन्यवाद के पात्र हैं।

-राजीव कृष्ण टण्डन

सी-६, सेक्टर-ई (न्यू), अलीगंज, लखनऊ

***

अक्षर लोक

'सर्व कल्याण के स्रोत हैं 'वेद' ट्रैक्ट के लेखक वैदिक विचारक डॉ.रूपचन्द्र 'दीपक' हैं। मात्र सोलह पृष्ठों में, गागर में सागर की तरह, उन्होंने वेदों का विस्तृत परिचय उपलब्ध करा दिया है। भाषा सरल है, अभिव्यक्ति स्पष्ट है और प्रस्तुति सार्थक है।

डॉ.दीपक लिखते हैं कि वेद में भारत, चीन, जापान आदि देशों का भेद नहीं किया गया। भाषा, भूषा या रंग का भेद नहीं किया गया। धनी-निर्धन या स्त्री पुरुष का भेद नहीं किया गया। जो वेद को नहीं मानता, उसके प्रति भी अनिष्ट चिन्तन नहीं किया गया।...मनुष्य के विभिन्न धरातल वेदों से एक समान पोषण पाते हैं। कोई ब्रह्मचारी हो या संन्यासी, राजा हो या कृषक, विद्या कमाए या बिन, सूदजीवी हो या मोक्षसाधक, उसे प्रत्येक पग पर वेद से निर्दोष और पूर्ण मार्गदर्शन मिलता है। व्यक्तिगत आचार-संहिता और सार्वजनिक आचार-संहिता शान्ति पूर्वक साथ-साथ चलती हैं।...सभी वेद पढ़ और सुन सकते हैं, प्रत्युत इनमें से जो वेद के विद्वान बन सकें वे समानाधिकारी होकर वेद पढ़ा और सुना सकते हैं।...सब मनुष्यों को निरालस होकर वेद का स्वाध्याय करते रहना चाहिए।

'सर्व कल्याण के स्रोत हैं 'वेद' के प्रकाशक हैं- वैदिक उपदेशक विद्यालय, १३६३, एल्डिको उद्यान-२, रायबरेली रोड, लखनऊ-२५ मूल्य है मात्र दस रुपये।

'सरस विद्यार्थी दोहा अंताक्षरी' पुस्तिका के कवि हैं मद्र प्रकाश गुप्त 'सरस'। जैसा पुस्तक के शीर्षक से स्पष्ट है, इसमें अंताक्षरी के लिये उपयोगी दोहों का संग्रह है। आज फिल्मी गीतों की अंताक्षरी होती है। पहले साहित्यिक कविताओं की अंताक्षरी हुआ करती थी। विद्यालयों में प्रायः अंताक्षरी प्रतियोगिताएँ हुआ करती थीं। 'सरस' जी का मत है कि अंताक्षरी जैसे आयोजन छात्रों व अध्यापकों को एक स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करते थे। अब वह सेवानिवृत्ति के पश्चात शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को प्रेरित कर अंताक्षरी-कार्यक्रमों को आयोजित कराने के प्रयास में हैं। 'विद्यार्थी दोहा अंताक्षरी' के प्रकाशक हैं- बाल कल्याण एवं बाल साहित्य शोध केन्द्र, भोपाल। पुस्तक का मूल्य मात्र २० रुपये है और इसके मिलने का पता है-'सरस' पुस्तक भण्डासर, बगेनी फाटक मोड़ के पश्चिम, हरदोई रोड, सण्डीला-२४१२०४ (हरदोई)।

'दानवीर भामाशाह' खण्डकाव्य की रचना सुधीरचित कवि गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' ने की है। इसमें भारत के महान सपूत महाराणा प्रताप को संकट के समय विपुल धनराशि के रूप में संजीवनी देने वाले दानवीर भामाशाह की प्रेरक गाथा छन्दबद्ध कविता में पिरोई गयी है। बहुत कम लोग जानते होंगे कि भामाशाह एक कुशल योद्धा भी थे। 'विनम्र' ने उनके योद्धा रूप का भी कुशल चित्रण किया है।

'दानवीर भामाशाह' कृति के लिये शुभाशीष देते हुए वरिष्ट कवि विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' लिखते हैं कि रचना में खण्डकाव्य के लक्षणों का पूर्णतः परिपालन किया गया है।...सर्ग विभाजन, चरित्र चित्रण, वातावरण का चित्रण, छन्द-विधान, रस-परिपाक, अलंकार योजना, भाषा शैली आदि सभी व्यवस्थित एवं श्रेष्ठ है। डॉ.रामाश्रय सविता का मत है कि यह कृति एक प्रेरणादायी काव्य कृति है। ...विनम्र ने विनम्रता पूर्वक एक ऐसा उदात्त चरित्र पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है, जो सम्भवतः अछूता था। राम किशोर तिवारी 'किशोर' के शब्दों में इसमें कवि ने भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के उन मान बिन्दुओं का स्पर्श किया है, जिनका स्मरण कर हम अपने गौरवशाली अतीत पर गर्व कर सकते हैं। तथापि गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' स्वयं मानते हैं कि ऐतिहासिक विषय होने के पश्चात भी 'कृति' इतिहास नहीं है। यह स्वर्णिम अतीत के धवल पक्ष को काव्य-तलालोक से दीप्त करने का एक प्रयास मात्र है। डॉ.दाऊजी गुप्त इसे भाव पक्ष और कला पक्ष की दृष्टि से भी एक उत्कृष्ट कृति मानते हैं और आशा करते हैं कि साहित्य जगत में इसको अपेक्षित सम्मान प्राप्त होगा।

पुस्तक का प्रकाशन उ.प्र.हिन्दी संस्थान की 'प्रकाशन अनुदान योजना' के अन्तर्गत किया गया है। हार्डबाउण्ड नयनाभिराम पुस्तक का मूल्य मात्र एक सौ बीस रुपये है।

'आँमव्यक्ति' लेखिकाओं की, विशेषकर कथा लेखिकाओं की साहित्यिक संस्था है, जो सन् १९९२ से सक्रिय है। यह संस्था सन् २००० से लगातार प्रतिवर्ष एक कहानी-संकलन प्रकाशित करती आ रही है। प्रत्येक संकलन के माध्यम से मुख्यतः लखनऊ की २५-३० लेखिकाओं की कहानियाँ पाठकों के समक्ष आती हैं। **'सोपान'** 'आँमव्यक्ति' का नौवां कहानी संकलन है। संस्था की अध्यक्ष और वरिष्ट साहित्यकार डॉ.शान्तिदेव बाला के अनुसार सभी संकलनों में कुछ नया करने का, कुछ नई दृष्टि देने का प्रयास रहा है।

'सोपान' की सम्पादक उषा चौधरी के शब्दों में- प्रकाशित लगभग सभी कहानियाँ पृथक-पृथक भावभूमि और चिन्तन पर आधारित हैं। ये कहानियाँ केवल स्त्रियों का शोषण ही नहीं अपितु समाज का यथार्थ, अकेलेपन की पीड़ा, कार्यक्षेत्र में झेली जाती त्रासदी, पैसे का मोह, वृद्धों की उपेक्षा, पुरानी पीढ़ी की व्यथा, राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार और गिरते सामाजिक मूल्यों को अभिव्यक्त करती चलती हैं।

निस्सन्देह 'सोपान' की लगभग सभी कहानियाँ पठनीय हैं और संकलन संग्रहणीय है। डॉ.इन्दिरा रेसोम गोस्वामी को समर्पित यह संकलन अभ्युदय प्रकाशन प्रा.लि. (५३८क/१३२४ शिवलोक, त्रिवेणी नगर-३, सीतापुर रोड, लखनऊ) द्वारा प्रकाशित है। लगभग डेढ़ सौ पृष्ठों के हार्डबाउण्ड इस ग्रन्थ का मूल्य मात्र एक सौ पचास रुपये है।

धारावाहिक-(37)

मनुष्य का विराट् रूप

-श्रीआनन्दकुमार-

इस प्रश्न पर ऋषि-मुनियों में परस्पर तर्क-वितर्क होने लगा। तब वसिष्ठ नेकहा- अतीगर्त्त शुनःशेप का जन्मदाता अवश्य है, परन्तु अब वह पुत्र-विक्रेता अपनी निर्ममता के कारण इसका पिता होने का अधिकारी नहीं है। राजा हरिश्चन्द्र को भी इस समय हम इस बालक का पिता नहीं मान सकते। उन्होंने इसको अपना क्रीतपुत्र बनाकर इसके बलिदान से अपना स्वार्थ सिद्ध करने का प्रयत्न किया- यह पिता का धर्म नहीं है। वरुण को भी हम शुनःशेप का पिता नहीं मानेंगे, क्योंकि उन्होंने इसका जो कुछ उपकार किया है, इसकी स्तुति पर प्रसन्न होकर ही किया है। पिता तो वह है जो स्वाभाविक स्नेह से बालक का रक्षण-पोषण करे। मेरी दृष्टि में एकमात्र महर्षि विश्वामित्र ने इस बालक के प्रति पिता जैसा आचरण किया है। उन्होंने स्वेच्छया निःस्वार्थ भाव से इसे प्रभावशाली मंत्र प्रदान किया जिससे इसकी जीवनरक्षा हुई। उन्हीं की दया और सहज प्रीति से इसे एक प्रकार से पुनर्जन्म मिला है। अतएव विश्वामित्र ही इसके पिता होने के योग्य हैं।

समाज के सभी नेताओं ने गुरुवर वसिष्ठ के मत का समर्थन किया। शुनःशेप ने विश्वामित्र को सहर्ष अपना पिता स्वीकार कर लिया। यह स्वाभाविक ही था क्योंकि लोक की रीति-नीति के अनुसार हित करने वाला पराया व्यक्ति भी अपना बन्धु है और अहित करने वाला अपना बन्धु भी पराया हो जाता है। देहोत्पन्न व्याधि अहितकर होने के कारण अप्रिय और हितकर वनौषधि भी मनुष्य को प्रिय लगती है।

गुण-चरित्र का महत्व

उपरोक्त कथा में आजकल के बहुसंख्यक अधिकार-प्रेमियों के लिए एक उपयोगी शिक्षा है। वह यह कि सभ्य समाज में पर-प्रतिष्ठा, ज्येष्ठता-श्रेष्ठता का निर्णय मनुष्य के गुण और चरित्र के आधार पर होता है। बालक को जन्म देने मात्र से किसी व्यक्ति को पिता के समस्त अधिकार नहीं मिल जाते। पितापन भी गुण-चरित्र की योग्यता-कर्त्तव्यपरायणता से मिलता है। किसी प्रकार का सच्चा अधिकार पाने का यही उपाय है। इटली के सुप्रसिद्ध राष्ट्र-निर्माता मैज़िनी ने सत्य ही कहा है कि कर्त्तव्य-पालन के बिना किसी के अधिकार सुरक्षित नहीं रह सकते-"Rights cannot exist except as a consequence."-*The Duties of Man.*

प्राचीन भारतीय समाज में ब्राह्मण-क्षत्रियों को जो विशेषाधिकार प्राप्त था उसका कारण यह नहीं था कि ब्राह्मण ब्रह्मा के मुख से और क्षत्रिय उनकी भुजा से उत्पन्न हुए थे। न तो ब्राह्मण हैजे के कीड़े थे और न क्षत्रिय वृद्ध ब्रह्मा के पुराने कपड़ों के चीलर। ब्राह्मणत्व वाणीबल से और क्षत्रियत्व बाहुबल से प्रमाणित होता था। उनकी प्रधानता के पीछे उनकी गुणवत्ता और सदाचार-परायणता थी। महाभारत में कहा है- जो शूद्र, सत्य और धर्म में परायण है, उसे मैं ब्राह्मण मानता हूँ, क्योंकि सदाचार से ही द्विज बनता है-

यस्तु शूद्रो दमे सत्ये धर्मे च सततोत्थितः।
तं ब्राह्मणमहं मन्ये वृत्तेन हि भवेद् द्विजः।
-वनपर्व

गुरुता भी ज्ञान और कर्म के आधार पर मिलती थी। मनु ने कहा है-"अज्ञो भवति वै बालः, पिता भवति मन्त्रदः।" अर्थात्, ज्ञानहीन व्यक्ति (चाहे वह वृद्ध ही क्यों न हो) बालक है और शिक्षक (चाहे वह अल्पवयस्क ही हो) पिता है। अंगिरा ऋषि अपने चचाओं को पढ़ाते समय उन्हें 'पुत्रो' कहकर ही सम्बोधित करते थे। महाभारत में बारह वर्ष के विद्वान् अष्टावक्र ने अधिकारपूर्वक कहा है कि कोई सिर के बाल श्वेत होने से वृद्ध नहीं होता है। बालक होकर भी यदि कोई ज्ञान-सम्पन्न है तो वह वृद्ध माना जाता है-

न तेन स्थविरो भवति येनास्य पलितं शिरः।
बालोऽपि यः प्रजानाति तं देवाः स्थविरं विदुः।
-वनपर्व

'गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिंगं न च वयः' के और भी उदाहरण दिये जा सकते हैं। जैसे-नारी को शक्ति एवं माता की पदवी उसके विशिष्ट गुणों के कारण प्राप्य थी। स्कन्दपुराण के शब्दों में 'शिशोः सुश्रीषणाच्छक्तिर्माता स्यान्माननाच्च सा।' अर्थात्, शिशु की सुश्रूषा करने से वह शक्ति कही गई है, तथा सदा सम्मान देने के कारण उसे माता कहते हैं। देवता भी अपने दिव्य गुण-कर्म के कारण परम पद के अधिकारी माने गये हैं।

प्रभुत्व का रहस्य बताते हुए भगवान् कृष्ण ने स्वयं कहा है कि 'यद्यपि लोग उसे ऐश्वर्य या प्रभुत्व कहते हैं, परन्तु मैं जो-कुछ करता हूँ वह अपनी जाति के लोगों का दासत्व है'-'दास्यमैश्वर्यवादेन ज्ञातीनां वै करोम्यहम्'-शान्तिपर्व। सुप्रसिद्ध रूसी सन्त साहित्यकार टालस्टाय ने अपने सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ में इसी सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है-"....Power over others- which in its real meaning is only the greatest dependence on others." -*War and Peace.*

अर्थात्, दूसरों पर अधिकार प्राप्त करने का अर्थ है- दूसरों पर अधिक से अधिक अवलम्बित रहना, उनका अनुग्रह प्राप्त करना, उन्हें सेवा से सन्तुष्ट रखना।

इन उदाहरणों से यह समझा जा सकता है कि किसी भी प्रकार का स्थायी अधिकार अपनी सुपात्रता और कर्त्तव्य-परायणता से ही मिल सकता है। अधिकारों के पीछे दौड़ने से सच्चा अधिकार नहीं मिलता। संख्याबल के प्रभाव से उच्चासन प्राप्त कर लेने से भी वह नहीं मिलता। मिथ्या आडम्बर से, वोट लेकर या अधिकारों की भीख माँगकर भी कोई सच्चा अधिकारी नहीं बन सकता। अधिकार तो कर्त्तव्य से ही प्राप्त होता है और कर्त्तव्य करने के लिए क्षमता- आत्म सामर्थ्य-चरित्रबल-व्यवहार दक्षता- चाहिए, क्योंकि प्रत्येक अधिकार के साथ उत्तरदायित्व लेना पड़ता है। शृगाल या शृगाल-बुद्धि सिंहासन का अधिकारी कैसे होगा? पद या पदवी से मनुष्य का गौरव नहीं बढ़ता। मनुष्य के कर्म ही किसी पद को गौरवपूर्ण बनाते हैं--"The place is dignified by the doer's deed."-*Shakespeare.*

आजकल अधिकार तो प्रायः सब चाहते हैं, परन्तु सभी उसके लिए कर्त्तव्य नहीं करना चाहते। ऐसे लोग अपनी असफलता और अप्रतिष्ठा के लिए स्वयं दोषी हैं। बहुत-से ऐसे लोग हैं जो छद्मसाधना के बल पर अपने को पुजवाना चाहते हैं उन्हें सफलता भी मिलती है, परन्तु क्षणिक। अन्त में मायावियों की दुर्गति ही होती है। इसी को लक्ष्य करके तुलसीदास ने कहा है- सारदूल को स्वांग करे, कूकर की करतूति। तुलसी तापर चाहिए, कीरति विजय विभूति।।

(मनुष्य का विराट् रूप से साभार क्रमशः)

आर्य परिवार परिचय माला

यदि आपने अभी तक अपना परिचय प्रपत्र भरकर न भेजा हो तो शीघ्र ही अपना पारिवारिक परिचय निम्नांकित निर्दिष्ट स्तम्भों के अनुसार भेजें तथा साथ ही कुल २००/- नकद/चेक/ड्राफ्ट 'आर्य लोक वार्ता' के पक्ष में संलग्न कर दें। पता : सम्पादक, आर्य लोक वार्ता, १६/८३८, प्रथम तल, रिंग रोड, इन्दिरानगर, लखनऊ-२२६०१६

२०३

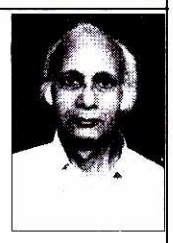

❑लक्ष्मण प्रसाद आर्य (पूर्व नाम एल.पी.मैढ़),
१३/३६६, इन्दिरा नगर, लखनऊ-२२६०१६
❑जन्मतिथि : १२ जून, १६३३
❑माता : स्व.राजदुलारी
❑पिता : स्व.राजकिशोर
❑शिक्षा : एम.ए., विधि स्नातक
❑व्यवसाय : से.नि.मुख्य प्रशासन अधिकारी, रजिस्टर्ड अधिवक्ता
❑सम्बद्ध : आर्य समाज, इन्दिरा नगर, लखनऊ
❑परिवार : पत्नी-श्रीमती शीला देवी(८०), गृहिणी; पुत्र-रवि शंकर(५०), सेवारत; शशि शंकर(४८), सेवारत; दिलीप शंकर(४४), सेवारत; पुत्रियाँ-आशा रानी वर्मा, प्रतिभा रानी वर्मा (विवाहित)।
❑विशेष : कर्नल बक्शी की प्रेरणा से वैदिक विचार धारा। आर्य समाज बरौनी के स्थापना काल से ३ वर्ष तक मंत्री। जनहित याचिका द्वारा मा.उच्च न्यायालय से शोरगुल के विरुद्ध निर्णय प्राप्त। पर्यटन में अभिरुचि। नित्य योगाभ्यास। वैदिक संस्कारकराना। इन्दिरा नगर के सेक्टर १०-१३ के मध्य नगर निगम द्वारा रोड मरम्मतव लोहे का बाड़ा लगवाया।

२०४

❑चन्द्रभान सिंह, ६४५ए/१६२, जानकी विहार कालोनी,
मड़ियाँव गाँव रोड, जानकी पुरम, लखनऊ-२२६०३१
❑जन्मतिथि : २० दिसम्बर, १६५२, पाथौली, मेरठ
❑माता : स्व.श्रीमती सम्पती देवी
❑पिता : स्व.श्री हनुमत प्रसाद सिंह
❑शिक्षा : एम.एस-सी. (गणित)
❑व्यवसाय : नौकरी से अवकाश प्राप्त
❑सम्बद्ध : सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट, जानकी विहार, लखनऊ
❑परिवार : पत्नी-श्रीमती इन्दूमणी प्रभा सिंह(६०); पुत्र-अम्बरीश सिंह(३५), नौकरी; निराला सिंह(२७), नौकरी; पुत्रवधू-श्रीमती शिल्पा सिंह(३३), गृहणी; पौत्री-अक्षिता सिंह(०६), अध्ययनरत।
❑यज्ञ : मासिक (चतुर्थ रविवार)
❑विशेष : सन् २००६ में आचार्य विश्वव्रत शास्त्री की प्रेरणा से वैदिक विचारधारा।

२०५

❑विशाल गुप्ता, क्यू-६४, पल्लव पुरम, फेज-२, मेरठ-२५०११०
❑जन्मतिथि : ०१ दिसम्बर, १६७१, मवाना, मेरठ
❑माता : श्रीमती कमलेश गुप्ता
❑पिता : स्व.श्री भुवनेश गुप्ता
❑शिक्षा : स्नातक
❑व्यवसाय : नौकरी
❑परिवार : पत्नी-श्रीमती रुचि गुप्ता(३६);
पुत्र-रचित राजवंशी(१६); अर्चित राजवंशी(१३)
❑यज्ञ : जन्मदिवस एवं विशेष पर्व पर
❑विशेष : प्रपितामह स्व.श्री मुरलीधर आर्य, आर्य समाज मवाना, मेरठ के संस्थापकों में से थे तथा उन्होंने बाद में संन्यास ले लिया और उनका नाम स्वामी अभयानन्द हो गया था।

२०६

❑शिवशंकर लाल वैश्य, एम.एम.एस.१/८८, सेक्टर-ए,
स्टेट.बैंक कालोनी, अलीगंज, लखनऊ-२२६०२१
❑जन्मतिथि : ०५ जुलाई, १६५८, सीतापुर (उ.प्र.)
❑माता : स्व.कौशल्या देवी
❑पिता : स्व.बाबू राम
❑शिक्षा : परास्नातक, एल.एल.बी.प्रथम वर्ष
❑व्यवसाय : प्रबंध सम्पादक, दैनिक 'प्रतिपल संवाद'
❑सम्बद्ध : आर्य समाज घासमंडी, सीतापुर (कोषाध्यक्ष)
❑परिवार : पत्नी-श्रीमती कुमुदिनी वैश्य(५२), नौकरी; पुत्र-अमृत वैश्य(२६), नौकरी; पुत्री-श्रीमती शैली वैश्य(२८), नौकरी; दामाद-आशीष वैश्य(३२), नौकरी।
❑यज्ञ : विशेष अवसरों पर
❑विशेष : १६६२-६३ में आर्य समाज मंदिर में शिक्षा प्राप्त करने पर वैदिक विचारधारा से सम्पर्क। पौराणिक परिवार से होने के कारण मूर्तिपूजा आदि धार्मिक अन्धविश्वासों को छोड़ने में समय लगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती के ग्रंथों को ऋग्वेद के अध्ययन के पश्चात पूर्णतः वैदिक मार्ग पर चलने के लिए प्रयासरत।

निवेदन

(1) समस्त लेखको एवं हितैषियों से सूचनार्थ निवेदन है कि 'आर्य लोक वार्ता' को किसी भी स्वीकृत/अस्वीकृत अथवा अवलोकनार्थ प्रेषित रचना/सामग्री को वापस मांगने का कष्ट न करें। यदि आवश्यक हो तो कृपया भेजने से पूर्व उसकी प्रतिलिपि अपने पास रख लिया करें। आशा है, इस संदर्भ में कृपापूर्ण सहयोग हमें प्राप्त होगा।

(2) 'आर्य लोक वार्ता' के सम्मानित पाठकों से निवेदन है कि यदि उन्हें डाक द्वारा 'आर्य लोक वार्ता' का वितरण नहीं हो पा रहा है, तो कृपया इसकी लिखित रूप में हमें - 19/838, प्रथम तल, रिंग रोड, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016 के पते पर सूचना दें ताकि समुचित कार्यवाही की जा सके।

-कार्यालायाध्यक्ष

www.thearyasamaj.org

काव्यायन

दीवाली है

❑रमन लाल अग्रवाल

(1)

स्वागत में राम के सजे हैं घर-बार आज,
गाँव नगर गली में फैली उजियाली है।
बाल-वृद्ध युवकों के उर में भरी उमंग,
नारियों के हाथ सजी पूजन की थाली है।
राकेट हवाइयाँ अनार ने मचाई धूम,
दगते पटाखों की आवाज बलशाली है।
राम राज्य आये, कोई दुख से न पीड़ित हो,
कामना 'रमन' की तभी असली दीवाली है।

(2)

सुरभित फूलों की सुरम्यता विलोक कर,
प्रमुदित होता निज वाटिका का माली है।
बार-बार छेड़ कर प्रेम की बजा के बीन,
भँवरों ने कलियों की नींद चुरा डाली है।
मिट्टी के दिये, न अब जलते मिलेंगे कहीं,
झालरों ने छीनी 'रमन' कुम्हारों की दीवाली है।
घूँघट पड़ा न मुख, आपको मिलेगा कहीं,
क्योंकि घरवाली अब जींस-टॉप वाली है।

–मे कन्हैयालाल रमनलाल, 7, नजीराबाद, लखनऊ

लालबहादुर शास्त्री

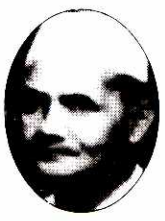

❑गौरीशंकर

भारत माँ के लाल प्रिय, लाल बहादुर नाम।
कद से छोटे थे भले, था व्यक्तित्व ललाम।।

जय जवान के साथ हो, जय किसान का घोष।
स्वाभिमान रक्षार्थ था शास्त्री का आक्रोश।।

शास्त्री ने दिखला दिया, आशा पूर्ण विहान।
क्षेत्र और रणक्षेत्र में, भारत बने महान।।

अन्न बचत हित व्रत रखो, सोमवार की शाम।
इस निर्णय से 'लाल' का, फैला जग में नाम।।

शिथिल पड़ा नेतृत्व है, भारत नहीं अशक्त।
लिखा शास्त्री ने विजय, देकर अपना रक्त।।

रहन सहन में सादगी, आत्मिक शक्ति असीम।
वाणी तीक्ष्ण, विचार मृदु, जैसे हो कटु नीम।।

दो अक्टूबर जन्म दिन, शास्त्री! तुम्हें प्रणाम।
छवि उज्ज्वल हो देश की, आओ भारत-धाम।।

–117, आदिलनगर, लखनऊ–22

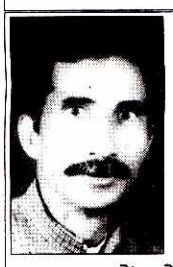

देश का प्रकाश

❑रुद्र प्रकाश गुप्त 'सरस'

(1)

चारों ओर अधिकार की ही बात गूँज रही,
कर्त्तव्य करना तो भार सा है बंधुवर।
आगा-पीछा सोचना भी संभव नहीं है उसे,
चढ़ा जिसे राजनीति का नशा है बंधुवर।
शरम-लिहाज तो है कहीं दूर चली गयी,
करना घोटाला पुष्पहार-सा है बंधुवर।
आशा के अभाव में निराश था समूचा देश,
'मोदी' आज देश का प्रकाश-सा है बंधुवर।

(2)

कलयुगी कारनामों के किले तमाम बने,
चोरी-सीनाजोरी को हुलास सा है बंधुवर।
कसक कृषक और मजदूर की बढ़ी है,
नेता जी को नित मधुमास सा है बंधुवर।
निज मुख और निज सुख देखे रानीति,
लोकतंत्र आज एक त्रास सा है बंधुवर।
आशा के अभाव में निराश था समूचा देश,
'मोदी' आज देश का प्रकाश-सा है बंधुवर।

–औद्योगिक क्षेत्र, सण्डीला, जिला–हरदोई–241127

बादल-गीत

❑डॉ. मिर्ज़ा हसन 'नासिर'

घिर आये दिल वाले बादल,
लखकर भूतल रोये बादल।
सागर से जो बिछुड़े बादल,
मिलने को फिर तरसे बादल।
मीठा जल ही बरसाते हैं,
खारे सागर के ये बादल।
बिजली ने हँसकर चुटकी ली,
गरजो कम बरसो हे! बादल।
दायें सूखा बायें बाढ़ें,
बर्बादी पर उतरे बादल।
बेघर बेचारे लोगों पर,
मत बरसाना ओले, बादल!
गोरे बादल भाग गये पर,
छोड़ गये कुछ काले बादल।
स्वर्ग भी बन जाता है मरघट,
क्रोधित हो जब फटते बादल।
चन्द्र चकोर के मध्य आ जाते,
आतंकी जहरीले बादल।
रस्तों से जो भटके -'नासिर',
मंज़िल पर कब पहुँचे बादल।

–जी–02 लोरपुर रेजीडेन्सी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

वंदे मातरम्

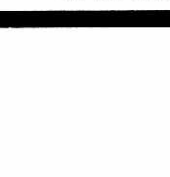

❑गजा भट्टया गुप्ता

राष्ट्रध्वज सा ध्वज, किसी दल का न होना चाहिए।
भ्रमित करके देश के संग, छल न होना चाहिए।
है यही आदर्श, गौरव, अस्मिता निज राष्ट्र की,
आज उज्ज्वल तो कलंकित कल न होन चाहिए।।

दल विशेष करता वर्षों से है अपमान तिरंगे का।
देख रहा चुपचाप देश है, अपमान तिरंगे का।
भारत में ही राष्ट्रध्वजा को जब समुचित स्थान नहीं,
एक विश्व में कैसे होगा? गौरवगान तिरंगे का।।

बोले न वंदे मातरम, उसको न अपना मानिये।
देशद्रोही जो छिपे हैं, उन्हें भी पहचानिये।
देशभक्तों ने सदा निज प्राण की आहुति दी है,
जागरण शुभ मंत्र 'वंदे मातरम' है जानिये।।

–बी–2/356, से–एफ, जानकीपुरम, लखनऊ

हर्ष-चतुष्पदी

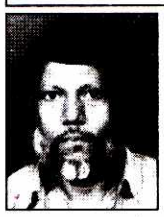

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

घाव भर सकते हैं, संस्कार नहीं,
और आप देख भी रहे हैं सही;
रोज का लेखन देखिए शामिल है-
न चाह के भी, सामने मंजिल है।

बहुतों के पते की मेरे पास लिस्ट है,
पर जाने कौन आर्य? नही आश्वस्त है।
आपके से हो जाना और बात है-
श्रेय आपको जाये, मुझ भी अभीष्ट है।

देखते देखते बीता जाता वर्ष है।
कभी पतन कभी उत्कर्ष है,
अब मेरा प्रतीक ही एकलव्य है-
गुरु आप मेरे निश्चय सहर्ष हैं।

–अक्ष मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

कालजयी काव्य

चल पड़े जिधर दो डग मग में...

❑मोहनलाल द्विवेदी

चल पड़े जिधर दो डग मग में, चल पड़े कोटि पग उसी ओर,
पड़ गयी जिधर भी एक दृष्टि, पड़ गये कोटि दृग उसी ओर,

जिसके सिर पर निज धरा हाथ, उसके सिर रक्षक कोटि हाथ,
जिस पर निज मस्तक झुका दिया, झुक गये उसी पर कोटि माथ,
हे कोटिचरण, हे कोटिबाहु, हे कोटिरूप, हे कोटिनाम !
तुम एकमूर्ति, प्रतिमूर्ति कोटि हे कोटिमूर्ति, तुमको प्रणाम !

युग बढ़ा तुम्हारी हँसी देख, युग हटा तुम्हारी भृकुटि देख,
तुम अचल मेखला बन भू की, खींचते काल पर अमिट रेख,
तुम बोल उठे, युग बोल उठा, तुम मौन बने, युग मौन बना,
कुछ कर्म तुम्हारे संचित कर, युगकर्म जगा, युगधर्म तना,

युग परिवर्तक, युग-संस्थापक, युग संचालक, हे युगाधार !
युग निर्माता, युग-मूर्ति! तुम्हें युग-युग तक युग का नमस्कार !
तुम युग-युग की रूढ़ियाँ तोड़ रचते रहते नित नई सृष्टि,
उठती नवजीवन की नींवें ले नवचेतन की दिव्य-दृष्टि,

धर्माडंबर के खंडहर पर कर पद-प्रहार, कर धराध्वस्त,
मानवता का पावन मंदिर, निर्माण कर रहे सृजनव्यस्त!
बढ़ते ही जाते दिग्विजयी! गढ़ते तुम अपना रामराज,
आत्माहुति के मणिमाणिक से मढ़ते जननी का स्वर्णताज!

तुम कालचक्र के रक्त सने दशनों को कर से पकड़ सुदृढ़,
मानव को दानव के मुँह से ला रहे खींच बाहर बढ़-बढ़,
पिसती कराहती जगती के प्राणों में भरते अभय दान,
अधमरे देखते हैं तुमको, किसने आकर यह किया त्राण?

दृढ़ चरण, सुदृढ़ करसंपुट से तुम कालचक्र की चाल रोक,
नित महाकाल की छाती पर लिखते करुणा के पुण्य श्लोक!
कँपता असत्य, कँपती मिथ्या, बर्बरता कँपती है थरथर!
कँपते सिंहासन, राजमुकुट कँपते, खिसके आते भू पर,

है अस्त्र-शस्त्र कुंठित लुंठित, सेनाएँ करती गृह-प्रयाण!
रणभेरी तेरी बजती है, उड़ता है तेरा ध्वज निशान!
हे युग-द्रष्टा, हे युग-स्रष्टा, पढ़ते कैसा यह मोक्ष-मंत्र?
इस राजतंत्र के खंडहर में उगता अभिनव भारत स्वतंत्र!

सच कह दिया है

❑उमेश 'गर्दी'

मुंसिफ ने हुक्म दिया मुझको, मैं बेदखल हो जाऊँ जहाँ से!
मेरा गुनाह सिर्फ इतना, मैंने सच कह दिया है जुबाँ से!!

सर कलम हो गया तो क्या, मेरी खुद्दारी तो जिंदा है,
दबाव मुझपर डाला गया, पलट जाऊँ अपने बयाँ से!

मसले हल नहीं होते तो कलम तलवार बन जाती है,
बागी पैदा होता है कोई अपने ही दरमियाँ से!

उजाले की बात करने वाले खुद चिरागां बुझा देते हैं,
वही मरहम लगाते हैं, निकला है तीर जिनकी कमां से!

मेरी कड़वी जुबां से मेरे खून के रिश्ते भी खफा हो गए,
मेरे पास सच की चादर, झूठ का कम्बल लाऊँ कहाँ से!

जालिम की हजूरी कर लेता, तो मेरे सर ताज़ होता,
भीड़ बुलाती रही, 'राही' निकला नहीं अपने मकां से!

–'कला–सदन', 363ए/4 मोती नगर, लखनऊ

राजस्थान-समाचार

अर्जुनदेव चढ्ढा को 'आर्यसेवाश्री' उपाधि

रावतभाटा, १३ अक्टूबर, २०१३। आर्य समाज रावतभाटा के ४७वें वार्षिक उत्सव के अवसर पर आर्य समाज एवं विभिन्न संस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान में जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के प्रधान श्री अर्जुनदेव चढ्ढा को 'आर्य सेवा श्री' सम्मान से सम्मानित किया गया। आर्य समाज रावतभाटा के प्रधान श्री रेशम पाल सिंह ने मोतियों की माला पहना कर श्री चढ्ढा का स्वागत किया। पूर्व मंत्री योगेश आर्य ने शाल ओढ़ाई तथा नरदेव आर्य ने स्मृति चिन्ह तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया। आर्य विद्वान ओमप्रकाश आर्य ने मानपत्र पढ़कर सुनाया। आर्य समाज रावतभाटा तथा विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने माला पहनाकर तथा महिला सदस्यों ने पुष्प भेंटकर श्री चढ्ढा को सम्मानित किया तथा बधाई दी।

श्री चढ्ढा पिछले ५० वर्षों से से सेवाकार्य कर रहे हैं। आपके द्वारा कुष्ठरोगी, अनाथ, निराश्रित लोगों की जो सेवा की जा रही है, वह अतुलनीय है। इस अवसर पर श्री चढ्ढा ने कहा कि जब तक मै। किसी गरीब की सेवा न कर लूँ तब तक मुझे संतोष नहीं मिलता है। हम जेलों में बन्दियों के लिए कंबल तथा शॉलें उपलब्ध कराते हैं। स्कूल में पाठ्य सामग्री तथा ड्रेस उपलब्ध कराते हैं। उन्होंने महिलाओं से निवेदन किया कि वे अपने घरों में सास-ससुर की सेवा कर स्वाध्याय करें। आयोजन कर्ताओं को धन्यवाद देते हुए श्री चढ्ढा ने कहा कि इस प्रकार के सम्मान से मेरे अन्दर ऊर्जा का संचार होता है और दूसरों को भी सेवा करने की प्रेरणा मिलती है। समारोह में वैदिक विद्वान विष्णु मित्र शास्त्री, अग्निमित्र शास्त्री, रामप्रसाद याज्ञिक, ओम प्रकार आर्य, भजनोपेदशक संजीव आर्य, जी.एस. दुबे, नरदेव आर्य तथा अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित थे। *(नरदेव आर्य)*

कच्ची बस्ती के बच्चों में वस्त्र वितरण

कोटा, ५ अक्टूबर। आर्य समाज जिला सभा द्वारा किशोर पुरा स्थित गोविन्द धाम मंदिर परिसर में बस्ती के बच्चों को वस्त्र वितरित किये गये। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समाज सेवी तथा गोविन्द धाम ट्रस्ट के अध्यक्ष भीमसिंह साहनी कहा कि असहायों, जरूरतमंदों की सेवा ईश्वर भक्ति के समान है। श्री साहनी ने बस्ती के बच्चे बच्चियों को वस्त्र वितरित करते हुए उन्हें मन लगाकर पढ़ाई करने की प्रेरणा दी। साथ ही सभी को बिस्कुट के पैकेट भी बांटे गये। आर्य समाज के जिला प्रधान श्री अर्जुनदेव चढ्ढा ने कहा कि समाज के समर्थ लोगों को निर्धनों और जरूरतमंदों की निःस्वार्थ सेवाी करनी चाहिए। इस अवसर पर श्रीमती सीमा पिपलानी, पिंकी साहनी, गीता चढ्ढा तथा अन्य लोग उपस्थित थे। *(अरविन्द पांडे)*

आर्य समाज का ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में वेद प्रचार

कोटा, २४ अगस्त। 'हम कौन हैं? हमारा जन्म क्यों हुआ है? हमारे क्या क्या कर्तव्य हैं, हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। इस प्रकार के समस्त प्रश्नों के उत्तर वेद में हैं। वेद में समस्त प्रकार का ज्ञान है। हम वेद मार्ग पर चलें एवं वैदिक विचारधारा को अपनाएँ।' उक्त उद्‌बोधन आर्य विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक ने भदाना ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में आर्य समाज कोटा द्वारा आयोजित वेद प्रचार सप्ताह के अवसर पर व्यक्त किये। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्ढा ने की तथा संचालन बद्रीलाल विजय ने किया। प्राचार्य राजेन्द्र कुमार मिश्रा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। *(अरविंद पांडे)*

हरियाणा-समाचार

आर्य समाज की नई पौध

झज्जर, २०.०८.१३। यज्ञ समिति झज्जर के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र, झज्जर में यज्ञ-भजन-प्रवचन व अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया। एक की मुहल्ले भट्टी गेट झज्जर के नर्सरी कक्षा से दसवीं कक्षा तक के सवा सौ बच्चों ने गायत्री महामंत्र का भावार्थ कविता के रूप में 'प्रभु तूने हमें उत्पन्न किया.....श्रेष्ठ मार्ग पर चला' सुनाकर श्रोताओं कमो मंत्रमुग्ध कर दिया। आर्य समाज झज्जर की प्रचार मंत्री श्रीमती रीना आर्या यज्ञ ब्रह्मा थीं और भारत स्वाभिमान झज्जर के विद्यार्थीगण वेदपाठी बने। श्रीमती ममता एवं श्री रामनिवास मुख्य यजमान बने। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे ब्र.सत्यनारायण खेड़ी जट। आर्य वीर दल के कर्मठ युवा मुख्यातिथि ने कहा कि जो व्यक्ति ब्रह्मचर्य का पालन करता है उसका सर्वांगीण विकास होता है। कार्यक्रम के अध्यक्ष पं.रमेश चन्द्र कौशिक थे तथा संचालन विजय आर्य नले किया। उपस्थित गण्यमान महानुभावों में श्री राम कुंवार जहांगीरपुर, चन्द्रपाल जहाजगढ़ माजरा, पं.जयभगवान आर्य, विक्रम, सत्य देव आर्य, भगवान सिंह, लाला प्रकाशवीर, शिवनारायण गावा, मा.पनसिंह, श्रीमती सुमित्रा, टीडोदेवी, फुलोदेवी दलाल, सोनिया आर्या थे। महाषय रतीराम आर्य ने आभार प्रदर्शन किया।

हरदोई-समाचार

आर्यसमाज सण्डीला

वयोवृद्ध सम्मान

आर्य समाज सण्डीला, हरदोई ने पितृपक्ष की भावना को व्यावहारिक रूप देते हुए एक सकारात्मक कदम उठाते हुए दिनांक ०२.१०.२०१३ को गाँधी जयन्ती पर्व पर वयोवृद्ध-दिवस का आयोजन किया। इस अवसर पर सण्डीला के लब्ध प्रतिष्ठ चार वयोवृद्धों (पितृजन) को सम्मानित किया गया। सम्मान प्राप्त वयोवृद्ध जनों के नाम हैं-श्री उमाकान्त पाण्डे(८८), पं.महादेव अग्निहोत्री(८६), श्री सालिक राम(८५) एवं श्री रामचरण जी(६२)। 'आर्य लोक वार्ता' वयोवृद्ध पितृजनों का अभिनन्दन करता है।

वेदप्रचार एवं धनुर्विद्या

आर्य समाज सण्डीला, हरदोई द्वारा दिनांक १३.१०.१३ को आयोति विशेष कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रातः यज्ञ एवं भजनोपदेश हुआ तदुपरान्त अपराह्न प्रख्यात वेद प्रचारक श्री नेमप्रकाश आर्य द्वारा धनुर्विद्या का प्रदर्शन किया गया; जिसे बड़ी संख्या में जनता ने देखा तथा सराहना की। इस अवसर पर पर्यावरण वेत्ता श्री हरिमोहन सिंह मुख्य अतिथि का स्वागत किया गया। *(डा.सत्यप्रकाश)*

लखनऊ-समाचार

पुण्य-स्मृति यज्ञ-सत्संग

दिनांक २६.०६.१३ को श्री पाल प्रवीण के आवास 'योगाश्रम' अलीगंज में उनके पितामह स्व. लाला हरप्रसाद की पुण्य-स्मृति में यज्ञ-सत्संग-गोष्ठी का आयोजन किया गया। डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न यज्ञ में यजमान बने अभिषेक एवं गीतांजलि। गोष्ठी में भाग लेने वालों में श्री गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र', सेवकराम आर्य, प्रेमशंकर शुक्ला, शिवशंकर लाल वैश्य, बलराम यादव, श्रीमती प्रमोद कटियार, शोभा सिन्हा, शशि रस्तोगी, कु.देविका, श्रीमती कमलेश पाल, शिवप्रकाश गुप्ता के नाम प्रमुख हैं। संयोजक पाल प्रवीण ने अपने पितामह के जीवन पर उनके सिद्धान्तों, आर्य समाज मवाना (मेरठ) को यागदान, उनकी उर्दू नज्में तथा महर्षि दयानन्द के मिशन के प्रति समर्पण भावना आदि पर प्रकाश डाला। श्रीमती प्रमोद कुमारी एवं प्रेमशंकर शुक्ल ने भजन प्रस्तुत किये। डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने अपने प्रवचन के उतरान्त लाला जी की स्मृति में स्वरचित कविता प्रस्तुत की।

कवि 'विनम्र' सम्मनित

२२.०६.२०१३। जनहित सेवा संस्था (अफहाम-ए-जमा सोसायटी) द्वारा सिटी बैंक्वेट हॉल, शीशमहल, हुसैनाबाद में दस समाज सेवियों को 'जनहित पुरस्कार वर्ष २०१३' से सम्मानित किया गया जिसमें सुपरिचित कवि श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' को काव्यक्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए शॉल, स्मृति चिन्ह एवं सम्मान पत्र देक अलंकृत किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रमुख समाजसेवी अली भीष्म नकवी एडवोकेट ने की जिसमें एच.पी.सिंह, सतीश कुमार सिंह, शन्नो जैदी, डॉ.बिन्नो अब्बास रिजवी, हरी प्रताप शाही, छोटेलाल मिश्र, कंचन वर्मा, सुषमा तिवारी, हरिश्चन्द्र धानुक आदि गणमान्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन संस्था के उपाध्यक्ष सै.मो.शान नकवी ने किया।

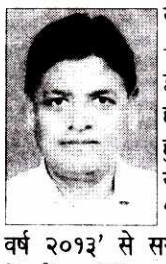

उत्तराखंड-समाचार

माता शैलबाला आर्य सम्मानित

आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर। स्व.स्वामी आत्मबोध सरस्वती द्वारा संस्थापित माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास के लोकोपकारक कार्यक्रमों की शृंखला में गत ३१ जुलाई २०१३ को आश्रम की साधिका माता शैलबाला आर्य को सम्मानित किया गया। इस अवसर उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.महावीर अग्रवाल, स्वामी दिव्यानंद, डॉ.जयदेव, न्यास के प्रधान गिरधारी लाल चन्दवानी, माता वीरबाला, माता रुक्मिणी आर्या (पूर्व प्रधान, न्यास) एवं अनेक संभ्रान्त जन उपस्थित थे। प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री रामशरण विद्यार्थी की सुपुत्री माता शैलबाला जी आश्रम में यज्ञ-ब्रह्मा, वेद प्रवचन, संस्कृत शिक्षा एवं 'स्वस्ति पंथा' के सम्पादन कार्य में निष्ठापूर्वक अपनी सेवाएँ प्रदान कर रही हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता आश्रम के प्रधान श्री यशपाल सचदेवा ने की तथा संचालन न्यास मंत्री श्री देवराज आर्य ने किया। *('स्वस्ति पंथा' से)*

लखनऊ-समाचार

डॉ. कामता प्रसाद कक्कड़ - बुझ गया प्रकाशस्तंभ

आर्य समाज लखनऊ के प्रमुख प्रकाश स्तम्भ- डॉ.कामता प्रसाद कक्कड़ का गत २७ सितम्बर २०१३ को निधन हो गया। आप लगभग एक वर्ष से गम्भीर अस्वस्थ चल रहे थे। ०१.१०.१३ को आपके आवास बी-१४७, सेक्टर-ए, महानगर पर आचार्य रामकृष्ण शास्त्री के आचार्यत्व में शान्तियज्ञ हुआ; जिसमें आर्यसमाज लालबाग के सदस्यगण तथा पारिवारिक जन सम्मिलित हुए।

डॉ.कक्कड़ मूलरूप में भू-वैज्ञानिक थे तथा मिट्टी-राख ईंटों पर शोधकार्य (१९६४) करके आपने विशेष ख्याति अर्जित की। लीबिया के आधुनिक रिसर्च सेंटर की स्थापना हेतु आपको आमंत्रित (१९७५) किया गया था तथा इंस्टीट्यूट आफ सेरेमिक्स, इंग्लैण्ड द्वारा आपको एम.आई.सेरेमिक्स की उपाधि से विभूषित किया गया था। आप अपने पीछे अपनी पत्नी श्रीमती कृष्णलता कक्कड़ तथा नेत्र रोग विशेषज्ञ पुत्र डॉ.शोभित कक्कड़ पुत्री जो रूस में उच्च पद पर प्रतिष्ठित है, छोड़ गये हैं। २००६ में डॉ.कक्कड़ को 'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह' में भावपूर्ण अभिनन्दन कर सम्मानित किया गया था। *(मोहनलाल अग्रवाल)*

आर्य समाज चन्द्रनगर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज चन्द्रनगर, आलमबाग का ५६वाँ वार्षिकोत्सव ३१ अक्टूबर से ३ नवम्बर २०१३ तक आर्य समाज के भव्य सभागार में मनाया जायगा। इस अवसर पर राष्ट्र कल्याण यज्ञ, ऋषि निर्वाण दिवस एवं दीपावली पर्व वैदिक परम्परानुसार उत्साह पूर्वक मनाया जायगा। ऋषि लंगर का आयोजन भी किया गया है तथा आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ का नवम्बर माह का मासिक अधिवेशन भी सम्पन्न होगा। यज्ञ के ब्रह्मा पं.सन्तोष कुमार वेदालंकार एवं चन्द्रदेव जी गुरुकुल वाले होगे तथा चन्द्रनगर समाज के नियमित पुरोहित आचार्य वेदव्रत अवस्थी भी साथ देंगे। स्वामी जगदीश्वरानन्द द्वारा संकलित यजुर्वेद शतकम से विशेष आहुतियाँ दी जायेंगी। इस वर्ष भजनों के कार्यक्रम के लिए घनश्याम प्रेमी जी अपनी मंडली के साथ पधार रहे हैं। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर लाभ उठायें।

सीतापुर-समाचार

सुनील कुमार सारस्वत सम्मानित

हल्दीघाटी, राजसमन्द। राष्ट्रीय साहित्य कला और संस्कति परिषद के तत्वावधान में भामाशाह सभाकक्ष, महाराणा प्रताप संग्रहालय में हिन्दी दिवस के अवसर पर डॉ.प्रीतम वी.यशवन्त, जिलाधिकारी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए समारोह में देश के १२३ विद्वान सम्मानित किये गये। स्वामी विवेकानन्द, महाकवि कालिदास, भक्त शिरोमणि, मीरा, काव्य शिरोमणि, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, साहित्य रत्न, शिक्षा भूषण, महाकवि माघ ऋषि तथा महाराणा प्रताप राष्ट्रीय एकता सम्मान नामक राष्ट्रीय सम्मान प्रदान किये गये। इसी क्रम में सुनील कुमार सारस्वत को आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी राष्ट्रीय सम्मान उत्तरीय, शाल, प्रशस्ति-पत्र तथा महाराणा प्रताप का प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर श्री सारस्वत द्वारा प्रकाशित एवं सम्पादित त्रैमासिक पत्रिका 'मानस-चन्दन' के ७६वें पुष्प का विमोचन किया गया।

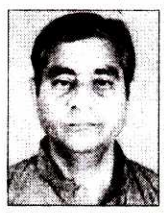

श्री सुनील कुमार सारस्वत की इस उपलब्धि पर राजा रघुबरदयाल इण्टर कॉलेज के अध्यापक, कर्मचारी व छात्र, साहित्यकार डॉ.रमेश मंगल वाजपेयी, चन्द्रेश शुक्ल, दिनेश चन्द्र मिश्र 'राही', अनुराग गुप्त, विनोदिनी रस्तोगी, अम्बरीश श्रीवास्तव, गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', डॉ.विश्वनाथ मिश्र, राधेश्याम मिश्र, निरंजन लाल अग्निहोत्री, रमारमण त्रिवेदी, घनश्याम शर्मा, रमेश दत्त सारस्वत, चन्द्र प्रकाश मिश्र,ी जागेश्वर वाजपेयी, उमाशंकर त्रिवेदी सहित अनेक साहित्यकारों व प्रबुद्ध जनों ने बधाई देकर हर्ष व्यक्त किया।

आशुकवि सोम दीक्षित को 'साहित्य-गौरव' सम्मान

दिनांक ७ सितम्बर २०१३ को गौरी बाल विद्या मंदिर एवं गोपीरानी मेहरे बालिका इण्टर कालेज की ओर से हिन्दी साहित्य परिषद द्वारा राष्ट्रीय भाषाई एकता संगोष्ठी का आयोजन प्राचार्या निर्मलापाल की अध्यक्षता में किया गया, जिसमें आशुकवि एवं साहित्यकार आचार्य सोम दीक्षित को 'साहित्य-गौरव' अलंकरण प्रदान कर सम्मानित किया गया। श्री दीक्षित को यह सम्मान उनकी काव्यकृति 'शाकल्य' पर दिया गया। इस अवसर पर संचालन करते हुए संयोजक अवधेश शुक्ल ने कहा- मनोविनोदी ज्ञान दर्शन व हिन्दी संस्कृत साहित्य के विद्वान सोम जी ने पर्यावरण चेतना पर भी कार्य किया है। संगोष्ठी को रामदास वैश्य, सुधांशु त्रिवेदी, मुजीब सीतापुरी, राजकुमार श्रीवास्तव आदि ने सम्बोधित किया। बच्चों ने भी काव्यपाठ किया। गोष्ठी का समापन राष्ट्रगान से सम्पन्न हुआ।

www.thearyasamaj.org

लखनऊ-समाचार

राष्ट्रीय पुस्तक मेला : एक युगान्तरकारी सृजन

''पुस्तकें तो बहुत लिखी जा रही हैं किन्तु कुछ पुस्तकें मानव निर्माण एवं राष्ट्र निर्माण में मील का पत्थर सिद्ध होती हैं। साहित्य सेवी पं.हरिओम शर्मा 'हरि' की कृति 'अपना रास्ता खुद बनाएं' एक ऐसी युगान्तरकारी पुस्तक है; जो मानव निर्माण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाती है तथा भारत के सुन्दर भविष्य का निर्माण और निर्धारण करती है। यह पुस्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की उस विचारधारा को आगे बढ़ाती है जो उन्होंने अपने अमर ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के द्वितीय समुल्लास के प्रारंभ में प्रस्तुत की है।''

उक्त विचार 'आर्य लोक वार्ता' के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने राष्ट्रीय पुस्तक मेला के मुख्य पण्डाल में आयोजित लोकार्पण समारोह में व्यक्त किये। समारोह को श्री वीरेन्द्र सक्सेना (पूर्व सूचना आयुक्त, उ.प्र.), उमेश चन्द्र तिवारी, आई.ए.एस., अशोक केवलानी, योग प्रशिक्षक, नवाब जफर मीर अब्दुल्लाह, आचार्य डॉ.रूपचन्द्र दीपक, प्रभात रंजन दीन एवं श्री सर्वेश अस्थाना ने भी सम्बोधित किया।

कार्यक्रम का महत्वपूर्ण अंश था- प्रख्यात शिक्षाविद् श्री जगदीश गाँधी का स्वागत एवं अभिनन्दन। श्री हरिओम शर्मा 'हरि' ने जगदीश गाँधी के स्वागत में अपने हृदय की श्रद्धा समन्वित भावनाओं को अभिव्यक्त किया। जगदीश गाँधी ने अन्य बातों के साथ हरिओम शर्मा 'हरि' के व्यक्तित्व की आन्तरिक एवं बाह्य विशेषताओं का भावपूर्ण चित्रण किया। समारोह प्रख्यात कवयित्री श्रीमती रमा आर्य 'रमा' की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, जिन्होंने अपने भावों को काव्य सूत्र में पिरो कर उपस्थित जनसमूह को चकित कर दिया। श्री प्रत्यूषरत्न पाण्डेय ने अपनी विवेचना पूर्ण शैली में कार्यक्रम का संचालन किया जिससे अंत तक श्रोताओं का समूह मुख्य पंडाल में मौजूद रहा। *('विनम्र')*

श्राद्धदिवस-पितृपक्ष

आर्य समाज सिर्फ बातें ही नहीं करता है

आर्य समाज ने जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है, उसे अमली जामा भी पहनाया है। आर्य समाज वेदमंदिर, राजाजीपुरम ने इस उक्ति को सच सिद्ध करके दिखला दिया है। जीवित माता पिता और बुजुर्गों के सम्मान की परिपाटी को आगे बढ़ाते हुए २६.०९.२०१३ को एक बृहद् आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्यअतिथि थे श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ। समारोह में आर्य समाज की समर्पित सदस्या श्रीमती शारदा अरोड़ा, बालकृष्ण उतरेजा, श्रीमती पुष्पा उतरेजा, राधाकृष्ण गंगोत्रा, श्रीमती कैलाश गंगोत्रा, हरीचन्द्र बत्रा, एम.के.सूरी सहित कई वयोवृद्ध जनों को उनके पारिवारिक जनों ने सम्मानित किया। पितृपक्ष में जहाँ पितृतर्पण के नाम पर लोग पिंडदान या जलांजलि जैसे निरर्थक कृत्य करते हैं, आर्य समाज ने वास्तविक रूप में अपने पितरों का अभिनन्दन करके एक भावनापूर्ण वातावरण का निर्माण कर दिखाया।

इससे पूर्व २७ सितम्बर से प्रारंभ उत्सव में नित्य प्रातः एवं सायंकाल यज्ञ तथा प्रवचन का सिलसिला चलता रहा; जिसमें बड़ी संख्या में राजाजीपुरम क्षेत्र के निवासियों तथा अन्य आर्य समाज की विचारधारा में आस्था रखने वालों ने भाग लिया। प्रसिद्ध वक्ता श्री महेन्द्र पाल आर्य के व्याख्यान तथा श्री दिनेश आर्य पथिक के भजनों ने इस समारोह को चिरस्मरणीय बना दिया। डॉ.आनन्द बरनवाल प्रधान एवं श्री निरंजन सिंह, मंत्री आर्य समाज के निर्देशन में समारोह ने जनता की शुभाकांक्षाओं को बटोरने में सफलता प्राप्त की।

सेवक जी की पुण्य-स्मृति

लखनऊ आर्य समाज में स्व.ओम प्रकाश सेवक का गौरवपूर्ण स्थान है।

सेवक जी ने अपने नाम के साथ 'आर्य' शब्द का प्रयोग करके आर्य समाज की प्रतिष्ठा में विशेष अभिवृद्धि की। मृदुल, शिष्टाचारपूर्ण और शालीन व्यवहार के कारण-सेवक जी के सौम्य व्यक्तित्व में अद्भुत आकर्षण था। उनके अभाव में आज लखनऊ आर्य समाज की श्रीहीन है। देश विदेश के आर्य विद्वान् सेवक जी के यहाँ आतिथ्य ग्रहण करना अपना सौभाग्य मानते थे।

सेवक जी की पुण्य स्मृति में २९.०९.२०१३ को ४/२३६, विशाल खण्ड, गोमती नगर में यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि थे प्रख्यात आर्य विद्वान आचार्य वागीश शास्त्री तथा यज्ञ-संचालन किया डॉ.रूपचन्द्र दीपक ने। यज्ञ में मुख्य यजमान थे स्व.सेवक जी के पुत्र श्री प्रबोध आर्य एवं श्री प्रवीर आर्य। स्व.सेवक की पुत्रवधुएँ श्रीमती प्रीति आर्य, श्रीमती सीमा आर्य, मीनाक्षी आर्य भी श्रद्धापूर्वक यज्ञ में शामिल हुईं। बड़ी संख्या में आर्यजनों ने आचार्य वागीश जी के प्रवचन को सुना। श्री मनीष आर्य, प्रधान तथा डॉ.मोहनलाल अग्रवाल, मंत्री द्वारा संचालित यह कार्यक्रम आर्यसमाज लालबाग के तत्वावधान में आयोजित हुआ। कार्यक्रम के अंत में प्रीतिभोज की व्यवस्था की गई।

नगर आर्यसमाज मंदिर, रकाबगंज

नगर आर्य समाज मंदिर, रकाबगंज में दिनांक २२.०९.१३ को वयोवृद्ध सम्मान एवं श्रद्धा दिवस मनाया गया, जिसमें अनुभवी एवं कर्मठ समाजसेवी ठाकुर मुरारी सिंह, श्री कौशल किशोर श्रीवास्तव तथा पं.गोपाल शरण मिश्र को सम्मानित किया गया।

नगर आर्य समाज के मंच पर महापौर डॉ.दिनेश शर्मा, विद्यासागर गुप्त, पूर्व विधायक, सुरेश श्रीवास्तव, पूर्व विधायक आमंत्रित अतिथि के रूप में विद्यमान थे। महापौर डॉ.दिनेश शर्मा ने धर्मभिक्षु पुस्तकालय एवं वाचनालय का उद्घाटन किया। श्री शर्मा ने अपने सामयिक संदेश में कहा 'यदि जीवित माता, पिता, पितामह की सेवासुश्रूसा नहीं की जाती है, तो मृतक पितरों का श्राद्ध तर्पण पाखण्ड मात्र है।'

इस अवसर पर वैदिक विद्वान् पं.सन्तोष कुमार वेदालंकार ने श्राद्ध के महत्व और उसके वास्तविक स्वरूप पर अपना मौलिक चिन्तन प्रस्तुत किया। आर्य विद्वान श्री रुद्रस्वरूप ने मनोहर भजनोपदेश किया। समारोह की अध्यक्षता श्री मुरारी सिंह, प्रधान, नगर आर्य समाज ने की तथा कार्यक्रम का संचालन एवं संयोजन श्री धुरेन्द्र स्वरूप बिसारिया 'प्रभंजन' ने किया। नगर आर्य समाज के उत्साही मंत्री श्री अजय श्रीवास्तव ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर आर्य उप प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री प्रत्यूषरत्न पाण्डेय तथा प्रधान श्री सतीश चन्द्र बिसारिया इत्यादि प्रमुख आर्यजन उपस्थित थे।

जीवित माता-पिता की सेवा ही श्राद्ध है

–चौधरी रणवीर सिंह

२९.०९.२०१३, एम.एस.८८, सेक्टर-ए, अलीगंज। श्री शिवशंकर लाल वैश्य के आवास पर आयोजित यज्ञ-सत्संग समारोह में मुख्य अतिथि चौधरी रणवीर सिंह, प्रधान, आर्यसमाज, सीतापुर ने पितृ-पक्ष की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा- जीवित अवस्था में ही माता-पिता, पितामह इत्यादि गुरुजनों की सेवा ही श्राद्ध एवं तर्पण है। मृतकों का श्राद्ध एवं तर्पण भौतिक पदार्थ द्वारा संभव नहीं है। प्रारम्भ में वैदिक यज्ञ डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ; जिसमें श्री राजाभइया गुप्त, श्रीमती कमलेश पाल, श्रीमती शालिनी सिंह(सुपुत्री चौ.रणवीर सिंह), गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' एवं श्री श्यामलाल वैश्य (पूर्व प्रिंसिपल नेशनल इण्टर कालेज, लखनऊ), रामकिशोर गुप्त, श्रीमती गुप्ता, श्री शुक्ला जी के अलावा विशेष अतिथि डॉ.सुभाष चन्द्र, डॉ.मंजू चन्द्रा ने अपनी उपस्थिति से समारोह को गौरवान्वित किया।

श्री शिवशंकर लाला वैश्य एवं श्रीमती कुमुदिनी वैश्य ने यजमान का आसन सुशोभित किया। इस अवसर पर कालोनी निवासी धर्मानुरागी गण्यमान व्यक्ति भी उपस्थित थे।

सम्पादक की डायरी

स्मृति दिवस

दि.०६.०९.१३ : बरौलिया, निकट मनकामेश्वर मंदिर, डालीगंज। लखनऊ के जाने माने वैद्य चिकित्सक एवं आर्य समाज हसनगंज पार के भूतपूर्व प्रधान स्व.श्यामलाल पाण्डेय की पुण्य-स्मृति में उनके पुत्र डॉ.अरविन्द नाथ पाण्डेय के आवास पर यज्ञ-सत्संग का कार्यक्रम सायं ४ बजे से ७ बजे तक सम्पन्न हुआ। यज्ञोपरान्त श्री पाल प्रवीण के भजन तथा श्री भूदेव सिंह के वक्तव्य के अनन्तर पं.सन्तोष कुमार वेदालंकार तथा डॉ.वेद प्रकाश आर्य के सारगर्भित वेदोपदेश से उपस्थित जनसमुदाय ने लाभ उठाया। आर्य समाज डालीगंज के पदाधिकारी एवं सदस्यगण इस अवसर पर मौजूद थे; जिनमें श्री देवेन्द्रनाथ चौधरी, सेवकराम आर्य, बलराम यादव के नाम प्रमुख हैं।

शान्ति यज्ञ

दि.०६.१०.१३ : कमता, चिनहट। लोकप्रिय सेवानिवृत्त खण्ड विकास अधिकारी श्री राम विलास पाण्डेय का ०२.१०.१३ को निधन हो गया। पतंजलि योगपीठ के सक्रिय सदस्य श्री शोभा राम शुक्ल की प्रेरणा से स्व.पाण्डेय जी की पुण्य स्मृति में शान्ति यज्ञ का आयोजन डॉ.वेद प्रकाश आर्य के सान्निध्य में किया गया। यज्ञ में दिवंगत रामविलास जी की धर्मपत्नी श्रीमती पार्वती, पुत्री ममता, दामाद शैलेन्द्र मिश्र तथा राजेश पाण्डे, राकेश पाण्डे, घनश्याम पाण्डेय एवं देवेन्द्र पाण्डेय ने भाग लिया तथा आहुतियाँ समर्पित करके अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। अंत में दो मिनट मौन रहकर शान्तिपाठ हुआ।

गृह प्रवेश

दि.१०.१०.१३ : ४२, प्रेमबाग कालोनी, चिनहट। वैमानिकी विभाग में कार्यरत श्री छोटेलाल यादव के नवनिर्मित आवास में गृहप्रवेश का कार्यक्रम पूर्ण वैदिक विधि एवं मान्यताओं के अनुरूप सम्पन्न हुआ। श्री छोटेलाल यादव, श्रीमती यादव तथा अनिल यादव के साथ ही उनके दोनों पुत्रों अमित एवं अतुल ने यज्ञकार्य में श्रद्धापूर्वक भाग लिया। संयोजक-दिनेश यादव, बड़ी जुगौली।

चूड़ाकर्म संस्कार

दि.११.१०.१३ : ३०, हरीनगर-नारायण नगर। एच.ए.एल. के सेवानिवृत्त इंजीनियर श्री ज्ञानेश्वर श्रीवास्तव की सुपौत्री 'ऋष्वा' (आत्मजा श्री आश्रुत एवं श्रीमती श्वेता) का चूड़ाकर्म संस्कार (मुंडन) वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ। श्रीमती ममता श्रीवास्तव (ऋष्वा की दादी), अखिलेश्वर श्रीवास्तव, प्रमोद कुमार, सुवित, श्रीमती नम्रता, एस.डी.निगम, श्रीमती निगम तथा अन्य पारिवारिक जनों ने ऋष्वा को आशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ दीं।

नवरात्र पर्व पर यज्ञ

दि.१२.१०.१३ : २/१२०, विश्वास खण्ड, गोमती नगर। श्रीमती रमा एवं श्री अजीत कुमार रस्तोगी के आवास पर वैदिक यज्ञ सम्पन्न हुआ; जिसमें गृहपति के अतिरिक्त गौरव, रति, नीलम, श्रीमती जोशी, श्रीमती वर्मा तथा अन्य उपनगरवासियों ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया। श्रीमती रमा ने यज्ञ की सुचारु व्यवस्था की तथा आगंतुकों को प्रसाद वितरित किया।

गृह प्रवेश

दि.१४.१०.१३ : ६७, वसुन्धरा इन्क्लेव, दयाल रेजीडेन्सी, चिनहट। डॉ.हिमांशु श्रीवास्तव के नवनिर्मित आवास में गृहप्रवेश का वैदिक विधान प्रातः ११ बजे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डॉ. हिमांशु, श्रीमती हिमांशु तथा उनके वयोवृद्ध पूज्य पिताजी के अलावा अनके पारिवारिक जन, इष्ट मित्र सपरिवार उपस्थित थे। सभी ने गृहप्रवेश के वैदिक विधान में भाग लिया तथा उसकी सराहना की। समस्त कार्यक्रम के संयोजन का कार्य श्री अतुल दीक्षित, एडवोकेट ने किया।

चूड़ाकर्म संस्कार

दि.१४.१०.१३ : छोटा चाँदगंज, डालीगंज। लालबाग गर्ल्स इंटर कालेज की शिक्षिका श्रीमती अनामिका अवस्थी एवं श्री आशीष अवस्थी के पुत्र चि.अमृत का चूड़ाकर्म संस्कार श्री रमाशंकर अवस्थी (पितामह) के सान्निध्य में समपन्न हुआ। अमृत के नाना श्री ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी एवं डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने यज्ञ संस्कार कार्यक्रम का संचालन किया। इस अवसर पर प्रीतिभोज का आयोजन किया गया; जिसमें बड़ी संख्या में आमंत्रित अतिथियों ने भाग लिया तथा चि.अमृत को आशीर्वाद के पुष्पों से विभूषित किया।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
'वेदाधिष्ठान' 539क/234,
हरीनगर, पो0-इन्दिरानगर,
लखनऊ - 226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
9956087585

E-mail-
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	-	100 रु. वार्षिक
व्रती सदस्य	-	250 रु. वार्षिक
ऋत्विक सदस्य	-	1200 रु. वार्षिक
होता सदस्य	-	2500 रु. वार्षिक
संरक्षक	-	12,000 रु.
प्रतिष्ठापक	-	50,000 रु.

सहयोग राशि 'बैंक ऑफ बड़ौदा' की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है–
खाता धारक - आर्य लोक वार्ता
खाता सं. - 00500 2000 00579
खाते का प्रकार-चालू खाता
बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, हजरतगंज लखनऊ।

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-२, हिमांशु सदन, ५-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' ५३९क/२३४ हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
डॉ.(श्रीमती)वीना कटियार, फर्रूखाबाद

मुख्य संरक्षक
अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ

संरक्षक
प्रमोद कुमारी, लखनऊ
श्रीमती शालिनी कुमार, लखनऊ
कौशल किशोर श्रीवास्तव, लखनऊ
जगदीश लाल खत्री, लखनऊ
श्रीमती कुसुम वर्मा, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री रघुनाथ सिंह आर्य, कानपुर
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई
शिवशंकर लाल वैश्य, सीतापुर

आवश्यक सूचना

कृपया पत्र-व्यवहार करने एवं सहयोग राशि भेजने हेतु आर्य लोक वार्ता के इन्दिरा नगर लखनऊ स्थित शिविर कार्यालय के पते का उपयोग करें–

डॉ. वेद प्रकाश आर्य,
प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता
19/838, प्रथम तल, रिंगरोड,
इन्दिरा नगर, लखनऊ-226 016